तौसीफ़-ए-हक़

शिव बहादुर सिंह 'दिलबर'

مختصر تعارف

نام شیو بہادر سنگھ

تخلص دلبر

شرف تلمذ الحاج وحید رائے بریلوی

ولدیت جناب جگناتھ سنگھ (مرحوم)

سن پیدائش ۲۰؍جنوری ۱۹۵۲ء

تعلیم ایم،اے،(معاشیات) ادیب کامل اردو

پیشہ سرکاری ملازمت این،سی،سی،آفس رائے

تصانیف ۱. "عقیدت کے پھول"

۲. "چراغ غزل"

۳. "توصیف حق"

اعزاز ۱. واقف اسمرتی سمان

۲. ساہتیہ سمان

۳. لوک شری سمان

۴. ساروت سمان (نو)

۵. کوی کل گورو سمان

۶. مولانا تجمل حسین سمان

۷. جگدیو سنگھ دیوانہ سمان

۸. وویکانند سمان

پتہ ۹. چندر نگر، رائے بریلی-۲۲۹۰۰۱ (یوپی

आध्यात्मिक संकलन

शिव बहादुर सिंह "दिलबर"

जीवन के उतार चढ़ाव में मज़बूती से जमे रहते हुए ख़ुशी व दुख दोनों हालतों में साथ निभाने वाली श्रीमती रामेश्वरी सिंह (धर्मपत्नी) के नाम

शिवबहादुर सिंह "दिलबर"

किताब का नाम	:	तौसीफ़-ए-हक़
शायर	:	शिवबहादुर सिंह "दिलबर"
नाशिर	:	शिवबहादुर सिंह "दिलबर"
इशाअत	:	२०१३
तादाद	:	५००
सफ़हात	:	२७०
कम्पोज़िन्ग	:	मो० मुश्ताक़
तबाअत	:	शाईन कम्प्यूटर गुलाब रोड, रायबरेली मो. 9807145260
सरवरक़	:	मो० मुश्ताक़, मो० काशिफ
क़ीमत	:	१५० रु०

मिलने का पता

शिवबहादुर सिंह "दिलबर"

६ चन्द्र नगर, रायबरेली २२६००१ (यू.पी.)

फ़ेहरिस्त

–::हम्दें::–

क्र. सं0	हम्दें	पेज न0.
15	या इलाही तू मुझे इल्म की दौलत दे दे	15
16	शजर तूने बनाये हैं हजर तूने बनाये हैं	16
17	खुद अपना कमाल-ए-हुनर रख.......	17
18	तेरी खुशबू, फूल भी तेरे, तेरी ही......	18
19	तूने दुनिया अजब बनाई है	19
20	गो दूर तेरी याद से ये जिन्दगी रही	20
21	जरा गुनाहों पे जी भर के मुझ को......	21
22	लोग कुछ समझें मगर तेरी..........	22
23	राह से तेरी जैसे-जैसे इन्साँ.........	23
24	तुझ से जो बा ख़बर नहीं होता	24
25	याद आई तेरी और मुझे सरशार.......	25
26	तेरी यादों के सहारे जागते-सोते.....	26
27	जो तेरी ज़ात से या रब जहाँ में लौ......	27
28	जो दिल के आइने में तेरा जलवा.........	28
29	जो तुझ से मोहब्बत करते है, जो.........	29
30	सिर्फ तू है तेरा सहारा है	30
31	तेरी यादों का या रब जब कि झोंका...	31
32	बशर जब तुझ से बेगाना हुआ है	32
33	गमों की भीड़ में लाजिम है आदमी.....	33
34	मुसाफ़िर हैं खुदा तेरी डगर के	34
35	तुझ को जो क़स्र-ए-दिल में.............	35
36	तू रग-ए-जाँ के क़रीं था देख.......	36
37	इन्साँ बा किरदार हुआ है	37

क्र. सं0	हम्दें	पेज न0.

क्र. सं0	हम्दें	पेज न0.
61	तेरे अनवार इन में जो बसने लगे	61
62	जो तेरे करम की नजर हो रही है	62
63	रवाँ है दिल में मेरे मौज तेरी उल्फ़त....	63
64	तेरी चाहत की जब रोशनी मिल गई	64
65	तुझी से इल्म, तुझी से कोई हुनर.....	65
66	एहकाम पे तेरे जो अपने जीवन को....	66
67	जो चाहतों से तेरी ये भरी नहीं होती।	67
68	याद आता है जो तू शाम-ओ-सहर....	68
69	या रब तेरी ताअत में दिलकश हर....	69
70	तेरी ताअत में जो गुज़री जिन्दगी......	70
71	बाद इक उम्र के जब मैंने तुझे याद.....	71
72	खुलूस-ए-दिल से जो तुझ पर........	72
73	तेरी जानिब जो अश्क-ए-तर आये	73
74	ज़मीं से मैंने खुदा ता ब आसमाँ देखा	74
75	तू अपनी मोहब्बत की तौक़ीर मुझे दे दे	75
76	दर्द-ए-ग़म-ए-दौराँ हो या ग़म की.....	76
77	हुआ है जो तेरा करम धीरे - धीरे	77
78	दिल में बसा के तेरे ग़म-ए-मोतबर....	78
79	तुझी से बज़्म-ए-जहाँ में बहार है मौला	79
80	जिस्म तेरा है जिन्दगी तेरी	80
81	सब से अफ़ज़ल जात है तेरी तेरा........	81
82	जो तेरे एहाकाम में ढलता है.......	82
83	तुझ से ही पा के जिन्दगी तुझ से.......	83

क्र. सं0	हम्दें	पेज न0.

तक़रीज़

डाक्टर सैयद अलीम अशरफ़ जायसी

तौसीफ–ए–हक अज़ "दिलबर" रायबरेलवी

इब्नुल मुअतज़ से मन्कूल है कि किसी अरबी से पूछा गया किः मा अहसनुश्शेर ? यानी अच्छी शायरी कौन है तो उस ने जवाब दिया किः मालम यजिबहु अनिल क़ल्बि शई। जिसे दिल तक पहुँचने में कोई चीज़ रोक न सके। इस बात को फारसी में अज़ दिल ख़ेज़ बर दिल रेज़ से तअबीर किया गया है।

बिलाशुबा अच्छी और मुअस्सिर शायरी के लिये कलाम की बलाग़त से ज्यादा जज़्बों की सदाक़त दरकार है, तअबीर की नुदरत से ज़्यादा फिक्र की रिक़्क़त मतलूब है और लफ़्ज़ों की आहन्ग से ज़्यादा माने का रंग ज़रूरी है। मेरे पेशे नज़र भी एक ऐसा ही दीवान है जो सादगी और पुरकारी का एक खूबसूरत नमूना है जिस में दरिया के शोर के बजाये समन्दर का सुकूत है। भारी भरकम लफ़्ज़ों के तबल व नक्कारे के बजाये हल्के फुलके कलमात की रूह परवर नग़मगी है और सिक़्ल व बोझल तरकीबों के बजाये पुर कशिश व आसान रोज़मर्रों की बज़्म आराई है।

और यह दीवान है शहर रायबरेली के मअरूफ शायर जनाब शिव बहादुर सिंह "दिलबर" का जिसे उन्होंने तौसीफ–ए–हक़ का नाम दिया है, जो न सिर्फ हुस्न व तौसीफ

का शाहकार है बल्कि वासिफ के शौक़ व सलीके का आईनादार भी है। ''दिलबर'' साहब से मुझे देरीना वाक़्फ़ियत है और कई बार उन से नआतिया और मदहिया कलाम सुनने का इत्तिफ़ाक भी हुआ है लेकिन जब उन्हों ने बराए तक़रीज़ अपना दीवान ''तौसीफ–ए–हक'' मुझे दिया तो मुझ पर यह बात आशकारा हुई कि वह सिर्फ शौक़ के नहीं ज़ौक के भी शायर हैं। और सिर्फ इत्तिफ़ाकी शाइर नहीं हैं बल्कि एक पुर गो और कोहना मश्क़ शायर व नाज़िम हैं। ''तौसीफ–ए–हक'' उनकी हम्दिया शायरी से इबारत है जिसमें सौ नज़्में हैं और उन में से हर एक नज़्म जज़्बे की सदाक़त, बयान की सलासत और उसलूब की हलावत की ग़म्माज़ है। इन नज़्मों में अगरचे कोई शेरी तफन्नुन व जिद्दत नहीं है और न ही कोई नया शेरी तजुर्बा क़िया गया है लेकिन यह सब अपने अन्दर ग़ैर मामूली तासीर रखती हैं शायद उनकी सादगी ही उन की सब से बड़ी कुवत है और उन में मौजूद जज़्बात की सदाकत ही उन का सब से बड़ा हुस्न है। मज़्कूरा बाला सिफात पर मुश्तमिल चन्द अश्आर मुलाहज़ा फ़रमायें:–

उरूजे फ़हम–ए–बशर ला इलाहा इल्लल्लाह
ज़िया–ए–क़ल्ब–ओ–नज़र ला इलाहा इल्लल्लाह

तुझ से जो बा ख़बर नहीं होता
आदमी मोअतबर नहीं होता
तेरे दीवाने से बड़ा हरगिज़
कोई भी ताजवर नहीं होता

मुआख्खिकाफ़िजत शेर को [illegible]
सादगी व शाइस्तगी की दाद दीजिए। [illegible]
के लुत्फ़ को दो आतिशा कर दिया है। [illegible]
अन्दाज़ भी देखिये:-

गो दूर तेरी याद [illegible]
लेकिन तेरे करम में न कोई कमी [illegible]

"दिलबर" साहब ने अपने इस दीवान में [illegible]
का बड़ा ही बरमहल और बरजस्ता इस्तेमाल किया है [illegible]
अल्फ़ाज़ के इन्तिख़ाब और उनकी [illegible]
इस्तेमाल किया है कि उन से कलाम में [illegible]
हुस्न दोबाला हो गया है:-

मैं हूँ इन्सान तू विधाता है
मैं भिकारी हूँ तू ही दाता है

तू ने मेरी हयात के दामन को भर दिया
देखा था जो भी ख्वाब वह साकार कर दिया

यूँ ही पर्वत, लीला न्यारी, ज्ञानी, संसार, ज्ञान की गंगा,
भूसागर, सुध बुध, ध्यान वग़ैरा का इस्तेमाल ऐसी ख़ूबसूरती के
साथ मिलते हैं जिस से कलाम की दिलकशी व रानाई में इज़ाफ़ा
होता है।

"दिलबर" साहब ने छोटी-छोटी बहरों का ख़ूब इस्तेमाल
किया है और उन बहरों ने कलाम की सलासत और तासीर दोनों
में इज़ाफ़ा किया है:-

मिल गया जिसको आसरा तेरा
बिलयक़ीं दिल से वह हुआ तेरा

हुस्न–ए–अल्ताफ़ पर मुस्कराता रहा
तेरी यादों से दिल जगमगाता रहा
कैफ़–ओ–मस्ती भी बढ़ती रही हर क़दम
तेरी जानिब क़दम जब बढ़ाता रहा

सलासत व सादगी के बाद "दिलबर" रायबरेलवी के इस मजमूए कलाम में अफ़कार, तसव्वुफ़ की आमेज़िश है। दूसरा नुमायाँ वस्फ़ है, यूँ तो उनका पूरा कलाम तसव्वुफ़ में डूबा है लेकिन कहीं कहीं यह रंग बहुत वाज़ेह हैः–

राज़ उसका अजीब है "दिलबर"
कब किसी कीसमझ में आता है

मेरा सफ़ीना तेरे हवाले
चाहे डुबो दे चाहे बचा ले

किसी को ग़ैर न समझूँ कभी ज़माने में
मेरे वजूद को एहसास–ए–मुख़्लिसी दे दे
जुल्म ढाते हैं जो इन्सान पे इन्साँ होकर
ऐ खुदा उनको भी इन्सान की उल्फ़त दे दे

दर अस्ल तसव्वुफ़ और उर्दू शायरी में चोली दामन का रिश्ता है, और दोनों एक दूसरे के लिये लाज़िम व मल्ज़ूम की हैसियत रखते हैं, हिन्दुस्तान में तसव्वुफ़ की अताएं बेशुमार हैं जिन में से दो क़ाबिल–ए–ज़िक्र हैः क़ौमी यकजहती और उर्दू शायरी गुज़श्ता सदी के निस्फ़ आख़िर से वतन अज़ीज़ में तसव्वुफ़ कमज़ोर हुआ। उसके मारूफ़ असबाब हैं, जिन के

ज़िक्र का न यह मौक़ा है और न उसकी ज़रूरत है, लेकिन उसका असर यह हुआ है कि यह दोनों मज़हर यानी क़ौमी यकजहती और उर्दू शायरी भी कमज़ोर हुई है और आज भी तसव्वुफ के ज़रिये उर्दू शायरी में अज़ सरे नव उस की बहारे रफ़्ता और अज़मते गुज़श्ता को वापस लाया जा सकता है। ''दिलबर'' साहब का तसव्वुफ से ताल्लुक सिर्फ बराये शेरो गुफ़तन नहीं है वह अपनी ज़िन्दगी को भी रंगे तसव्वुफ़ में देखना चाहते हैं:–

मुझ को मालूम है तुझको मरगूब है
ज़िन्दगानी मेरी सूफ़ियाना रहे

आख़िर में जनाब ''दिलबर'' रायेबरेलवी साहब को उनके इस हम्दिया मजमूए की इशाअत पे दिल की गहराई से मुबारक बाद देता हूँ और उन के फ़िक्र व शायरी की इस सफ़र के मन्ज़िले कमाल तक पहुँचने की नेक तमन्नाएं पेश करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि उनकी यह काविश अस्हाबे ज़ौको व नज़र से दाद व तहसीन हासिल करेगी।

शोब–ए–अरबी,
मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी
हैदराबाद

"मैं तेरी हम्द लिखना चाहता हूँ"

मो0 लईक अन्सारी

"अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन"

"यानी सारी खूबियाँ अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का"(कन्जुलईमान)

तमाम तारीफ़ें उस खुदाये मुतलक़ के लिये "जो रब्बुल आलमीन" है। जो "अर्रहमानिर्रहीम" है। जो "मालिक –ए– यौमिददीन" है। जो "खालिक़–ए–अर्ज़ –ओ– समा" है, जो "समीउल अलीम" है, जो "ग़फ़ूरुर्रहीम" है, जो अव्वल है जो आख़िर है, जो रज़्ज़ाक़ है, जों जब्बार है और जो क़हहार है। दुनिया का हर ज़र्रा उसी वहदहू ला शरीक की हम्द व सना में रत्बुल्लिसान नज़र आता है। इन्सान भी अपने खालिक की तारीफ़ व तौसीफ़ करता है और हैवान भी अपने अपने अन्दाज़ से खल्लाक़–ए–आलम की हम्द–ओ–सना करते हैं। चरिन्द व परिन्द भी अपने माबूद की तारीफ़ किया करते हैं और कीड़े मकोड़े भी अपने पालन हार के गुन गाया करते हैं। आसमान की बुलन्दियाँ और ज़मीन की वुस्अतें भी परवरदिगारे आलम की तारीफ़ें करती हैं, तो आबशारों की नग़मगी ज़बाने हाल से अपने रब की बड़ाई करती है, ग़र्ज़ कि दश्तो जबल हों, बहरो बर हों, खुश्को तर हों, शम्सो क़मर हों, दुनिया की हर चीज़ अपने अपने अन्दाज़ से खुदा की तारीफ़ करती है लेकिन ज़ात–ए–खुदावंदी

तारीफ़ व तौसीफ से बालातर है, उस की तारीफ व तौसीफ़ का हक़ अदा ही नहीं किया जा सकता। जब अंबिया–ए–कराम, अस्हाब–ए–रसूल, वलिये कामिल बुज़ुर्गाने दीन, मुहदिदसीन व मुफ़स्सिरीन और मुजतहदीन अल्लाह तबारक–ओ–तआला की हम्द का हक़ अदा न कर सके तो आम इन्सानों की क्या बिसात हो सकती है, अगर ज़मीन की सारी परतों का कागज़ बना दिया जाये, दुनिया के सारे दरख्तों की शाखों के क़लम बना दिये जायें और समन्दरों के पानी की रोशनाई बना दी जाये तब भी खल्लाक़े आलम की बुज़ुर्गी व बरतरी इहात–ए–तहरीर में नहीं लाई जा सकती, इसके बावजूद इन्सान बक़द्रे ज़र्फ़ अपने मालिक हक़ीक़ी की तारीफ़ व तौसीफ़ में कोशाँ नज़र आता है। शिव बहादुर सिंह "दिलबर" भी उन्हीं में से एक हैं जो शमा–ए–हक़ की परसतारी और मैख़ान–ए–तौसीफ़ की मैख्वारी का दावा करते नज़र आते हैं, मगर उन का यह जज़्बा कितना हक़ीक़ी और कितना मस्नूई है इसका फैसला अरबाब–ए–फ़िक्रो नज़र करेंगे कि जाम–ए –वहदत की सरशारी के बग़ैर हम्दिया शायरी फ़ितरी तक़ाज़ों से हम आहंग हो सकती है या नहीं?

शिव बहादुर सिंह "दिलबर" ने बहैसियत एक इन्सान रब्बुल आलमीन की तारीफ़ और तौसीफ़ की सई भर की है और उस के पसे पुश्त उन का यही मन्शा कार फ़रमा नज़र आता है:–

मैं तेरी हम्द लिखना चाहता हूँ
मुक़ददर को बनाना चाहता हूँ
ज़माने की निगाहों से छुपाकर
तुझे इस दिल में रखना चाहता हूँ

और इस मन्शा में तख़्लीक़ी मक़सदियत का उन्सुर जब नुमायाँ हो तो उसकी अफ़ादियत और भी बढ़ जाती है:—

तुझको क़स्र—ए—दिल में खुदाया बसा लिया
लारैब मैंने मक़सद—ए—तख़्लीक़ पा लिया
तेरी ख़ुशी के वास्ते राह—ए—हयात में
बेकस कोई मिला तो गले से लगा लिया

यादे खुदा जिनकी ज़ीस्त का शेवा हो जाती है उनकी ज़िन्दगी क़ाबिले रश्क हो जाया करती है, शिवबहादुर सिंह "दिलबर" के यह अश्आर उसकी ग़म्माज़ी कर रहे हैं:—

तेरी याद को हमसफ़र कर लिया है
हयात और भी मोअतबर कर लिया है
तेरी याद में अश्क—ए—पैहम बहाकर
उन्हें रश्क—ए—लाल—ओ—गुहर कर लिया है

राहे हक़ पर चलना जिनकी ज़िन्दगी का नस्बुलऐन होता है, कामयाबियाँ उनके क़दम चूमती हैं, और जिस पर खुदा का करम हो जाता है ज़िन्दगी की तमाम दुश्वारियाँ उसके लिये बहुत आसान हो जाती हैं:—

है यक़ीं या रब करम जिस दम तेरा हो जायेगा
ज़िन्दगी का मेरी आसाँ रास्ता हो जायेगा
दे मुझे तौफ़ीक़ यारब राहे हक़ पर मैं चलूँ
ज़िन्दगी का इस तरह कुछ हक़ अदा हो जायेगा

खुदा की ज़ात से बेगान्गी दुनिया की तबाही का पेश

ख़ेमा है लेकिन शायर का यह हुस्ने नज़र है जो अपनी ज़ात की तारीकियों को खुदा की इनायतों से मुनव्वर करना चाहता हैः–

बशर जब तुझ से बेगाना हुआ है
ज़माने में बहुत रूस्वा हुआ है
तेरी चश्म–ए–इनायत से मुनव्वर
मेरी हस्ती का हर गोशा हुआ है

और यह किः–

आरिफ़–ए–खालिक़ ए दो जहाँ होगई
ज़िन्दगानी मेरी जाविदाँ हो गई
तू जो आया तसव्वुर में आलम ये था
गुन्ग हैबत से अपनी ज़बाँ हो गई

खुदा की ज़ात पर एतक़ाद रखना ही शायर के नज़दीक आदमियत के ऐतबार की दलील है और यही ऐतबार आदमियत की मेराज है जिस के हुसूल के बग़ैर न कोई अहले फ़िक्र हो सकता है और न अहले नज़रः–

तुझ से जो बाखबर नहीं होता
आदमी मोतबर नहीं होता
तेरी कुदरत से बेनियाज़ कभी
कोई अहल–ए–नज़र नहीं होता

इस सियाक़ व सबाक़ में उनके यह जज़्बात काबिले क़द्र हैं किः–

ग़मों की भीड़ में लाज़िम है आदमी के लिये
तेरा खयाल ज़रूरी है ज़िन्दगी के लिये

वह बदनसीब है तुझ से रहे जो बेगाना
तेरा करम तो है दुनिया में हर किसी के लिये

सिन्फ़े हम्द, उर्दू शायरी की सब से मोतबर "सिन्फ़-ए-सुख़न" है, लेकिन यह अम्र क़ाबिल अफ़सोस है कि यह "सिन्फ़" अहल-ए-फ़िक्र-ओ-नज़र और अरबाबे इल्म-ओ-दानिश की बेतवज्जोही का शिकार रही है। उमूमन शोरा का हाल यह होता है कि अपनी पूरी उम्र-ए-शायरी में एक दो हम्द महज़ इस लिये कह कर रख ली जाती हैं कि जब कभी उनका कोई मजमूआ शाये हो तो एक "हम्द" ख़ैर-ओ-बरकत के लिये रिवायतन शामिल कर ली जाये, लेकिन शिवबहादुर सिंह "दिलबर" लाएक़े मुबारक बाद हैं जिन्होंने न सिर्फ़ बाक़ायदा हम्दें लिखीं बल्कि हम्दों का मजमूआ शाये कराने की जसारत भी की, और उसमें उनके यही जज़्बात कार फ़रमा नज़र आते हैं:-

तेरे करम से न मिलती अगर रज़ा तेरी
मेरी हयात मुकम्मल कभी नहीं होती
दिया है फहम-ओ-बसीरत की रोशनी वरना
मेरे नसीब में फिर शायरी नहीं होती

यह शायराना शुऊर और फ़िक्री पुख़्तगी फ़ैज़ान है शायरे बाअमल उस्तादुश्शुअरा हज़रत वहीद रायबरेलवी का जो ज़िन्दगी भर "राहे हक़" पर बेख़ौफ़-ओ-ख़तर गामज़न रहे, बिला उज़्र नमाज़े कज़ा कीं न रोज़े तर्क किये, हज बैतुल्लाह की सआदत हासिल की और ज़िन्दगी भर "वहदानियत"

को ही अपनी फ़िक्र–ओ–नज़र का महवर बनाया, आँखों की बीनाई से माजूर हुए लेकिन मुहब्बत–ए–रसूल की बीनाई चश्म–ए–मुकददर से उनकी रहनुमाई करती रही, जिस्म लाग़र हुआ तो बैठकर नमाज़ें अदा कीं, बीमारी के आलम में भी नमाज़ कज़ा होने का दर्द उनकी आँखों से आँसू बनकर छलकते हुए बारहा लोगों ने देखा है।

शिव बहादुर सिंह "दिलबर" ने इसी बहरे बेकराँ से फैज़ हासिल करने की सआदत हासिल की है और दबिस्तान–ए –अमीर मीनाई के उन्हीं उसूलों की पैरवी की है, इस ख़ानवादे की शिनाख़्त का अस्ल सरचश्मा रही हैः–

मन्ज़र मन्ज़र ढूढ़ रहा हूँ
तुझ को बराबर ढूढ़ रहा हूँ
हर ज़र्रे में जान के तुझ को
बहरो बर में ढूढ़ रहा हूँ
शायद तू मिल जाये मुझको
दिल के अन्दर ढूढ़ रहा हूँ

नफ़स हर नफ़स हर कदम देखता हूँ
बहर सू तेरा ही करम देखता हूँ
करिश्मे तेरी शाने कुदरत के यारब
बसारत है कम, कम से कम देखता हूँ

या इलाही तू मुझे इल्म की दौलत दे दे
अपने बन्दों के लिये दिल में मुहब्बत दे दे
मैं कभी राह–ए–सदाकत से न भटकूँ मौला
रहबरी के लिये सरकार की सीरत दे दे

शिव बहादुर सिंह "दिलबर" ने मुख्तलिफ़ ज़ावियों से हम्दिया अश्आर कहने की कोशिश की है, और हम्द के वसी तनाजुर में फ़िक्रो नज़र के चराग़ जलाये हैं:–

मेरे वजूद में बस एक अपनी कुदरत का
हर इक नफस पे जो खटके वह ख़ार रहने दे
हर इक बशर को जहाँ में नसीब हों खुशियाँ
दुआ लबों पे यह परवरदिगार रहने दे

———————

जो तुझ से मुहब्बत करते हैं जो दिल से इबादत करते हैं
वह नाम पे तेरे मरते हैं और नाम पे तेरे जीते हैं
बे साख़्ता याद आती है तेरी, दिल ग़म से बेकल होता है
जब देखता हूँ मैं जिस्मों से रूहों के परिन्दे उड़ते हैं

———————

हम्द होती है जिस वक़्त लब पर मेरे
हेच होता है घर बार का तज़किरा
तेरी चश्म–ए–इनायत से होने लगा
क़ल्ब–ए–"दिलबर" के अफ़कार का तज़किरा

———————

आदम की पेशानी चमकी नूर से तेरे ऐ मालिक
जिस्म है खाकी फिर भी हर दम महका–महका रहता हूँ
जिस दिन से एहसास हुआ है अपने गुनाहों का "दिलबर"
उस के ग़ज़ब से डरता हूँ और सहमा–सहमा रहता हूँ

हम्दिया शायरी का दामन बहुत वसीअ है, सूफी शोरा ने इस सिन्फ़ को बहुत वुस्अत बख़्शी है, ख़ानकाहों ने इस सिन्फ़ सुख़न की इर्तिक़ा में नुमायाँ किरदार अदा किया है, और औलिया अल्लाह और बुजुर्गान–ए–दीन ने भी इस ज़िम्न में कारहाये नुमायाँ अन्जाम दियें हैं, लेकिन मौजूदा अदबी मन्ज़र पर अगर निगाह डाली जाये तो वाज़े होता है कि इस अहेद में शोरा–ए–किराम ने इस सिन्फ़ के साथ बेतमन्नाई बरती है, ऐसे माहौल में शिव बहादुर सिंह "दिलबर" यक़ीनन क़ाबिले मुबारक बाद हैं जिन्होंने हम्दिया मजमूआ "तौसीफ़–ए–हक़" शाये करा कर अरबाब–ए–फ़िक्र–ओ–नज़र को आईना दिखाने की सई की है जो क़ाबिल–ए–तारीफ भी है और लाइक़–ए–तक़लीद भीः–

तेरी उल्फ़त ने मेरी हस्ती को आला कर दिया
सर बुलन्दी और ऊँचा मेरा रुतबा कर दिया

गुमरही की राह पर मैं चल रहा था ऐ खुदा
तू ने दी राहे सदाक़त पाक जज़्बा कर दिया
खान–ए–दिल में अंधेरा ही अंधेरा था मेरे
इश्क़ ने तेरे खुदा उस में उजाला कर दिया

उत्तर दरवाज़ा, रायबरेली
229001,
मो0:–9415743535

दिलबर का अपने मालिके हक़ीक़ी के प्रति इज़्हारे तशक्कुर

मो0 मतीन नदवी

''अलइन्सान अब्दुलइहसान'' ये अरबी ज़बान का मक़ोला है जिस में सद फ़ीसद सदाक़त, अगर कुछ कोताह फ़हम जिन की अक़्ल व बसीरत पर पर्दा पड़ा हुआ है और यह मक़ोला उनपर सादिक़ न आता हो तो उन की फ़ितरत के मस्ख़ हो जाने के दलील है, मक़ोले की सदाक़त से इस पर कोई हर्फ़ नहीं आता। चूँकि इन्सानों पर सबसे ज़्यादा एहसानात अल्लाह तबारक–ओ–तआला के हैं, इन्सान का पैदा करना, इस दुनिया–ए–आब–ओ–गिल में आने से कब्ल ही उसे मुख्तलिफ़ मराहिल से बहुस्न व खूबी गुज़ारना, यह सिर्फ खुदाए वहदहु ला शरीक का ही करम है कि इन्सान को उसने अशरफुलमख़्लूक़ात बनाया, इन्सान को दुनिया में भेजकर उसकी ज़रूरत की तमाम चीज़ें पैदा फ़रमाई और उनसे इस्तिफ़ादा के लिये उसे अक़्ले सलीम अता फ़रमाई, रहमत ए आलम स0 का इरशाद है कि ''इन्नमददुनिया खुलिक़त लकुम वइन्नकुम ख़ुलिक़तुम लिलआख़िरा'' दुनिया इन्सानों के लिये बनाई और इन्सानों को आख़िरत के लिये बनाया कि इन्सान अपने तमाम आमाल व अफ़आल में आखिरत को पेशे नज़र रखे, किसी भी काम को करने से पहले उसके अन्जाम पर नज़र रखे और यह यक़ीन कामिल रहे कि उसे एक न एक दिन अपने

ख़ालिक़–ए–हक़ीक़ी के दरबार में हाज़िर होना है और अपने अच्छ–बुरे कामों का बदला मिलना है, अगर दुनिया में किसी ने किसी को नाहक़ सताया परेशान किया, उसकी दिलशिकनी की तो खुदाये वहदहु लाशरीक के दरबार में उसके उस अमल के बारे में पूछ ताछ होगी, ऐसे ही किसी भी इन्सान ही नहीं बल्कि हैवानों के साथ भी अगर कोई अच्छा सुलूक करता है तो उसे वहाँ पर पूरा–पूरा बदला दिया जायेगा, कोई भी कमी नहीं की जायेगी बल्कि इस्तेहक़ाक़ से बढ़कर यह मिलेगा। जिस शख़्स पर खुदा का करम हो जाये, उसकी ज़िन्दगी का सफ़र आसान हो जाता है इस बात को ''दिलबर'' साहब ने शेरी पैकर में यूँ बयान किया है:

है यक़ीं यारब करम जिस दम तेरा हो जायेगा
ज़िन्दगी का मेरी आसाँ रास्ता हो जायेगा
दे मुझे तौफ़ीक़ यारब राह–ए–हक़ पर मैं चलूँ
ज़िन्दगी का इस तरह कुछ हक़ अदा हो जायेगा

एक ऐसी ज़ात जिसका करम व एहसान लामहदूद है, उसका शुक्र अदा न करना कितनी बदनसीबी की बात है लाइक़–ए–तारीफ़ और मुस्तहक़े मुबारक बाद हैं शिवबहादुर सिंह ''दिलबर'' कि अल्लाह तबारक–ओ–तआला ने उन्हें हम्द कहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, यह महज़ अल्लाह का फ़ज़्ल–ओ–करम है, उसकी रहमत से बईद नहीं कि वह जब चाहे और जिसे चाहे अपने फ़ज़्ल ओ करम से ज़र्रे से आफ़ताब बना दे। ''दिलबर'' साहब का दिल इस बात का शाहिद है कि खुदा से ग़ाफ़िल हो कर आदमी बाख़बर कहलाये जाने का मुस्तहक़ नहीं और न ही उसकी कुदरत से बेनियाज़ी का शेवा अपनाने वाला

अहले नज़र हो सकता है। इसी बात को ''दिलबर'' साहब ने बड़े ही खूबसूरत अन्दाज़ में शेरी पैकर अता किया है:-

तुझ से जो बाख़बर नहीं होता
आदमी मोतबर नहीं होता
तेरी कुदरत से बेनियाज़ कभी
कोई अहल-ए-नज़र नहीं होता

''दिलबर'' साहब को खालिक़े कायनात की तरफ़ से शेर गोई का जो मल्का अता हुआ है उसके इज़्हार-ए-तशक्कुर के तौर पर वह हम्दिया अश्आर मुशतमिल शेरी मजमूआ मन्ज़रे आम पर लाने का इरादा रखते हैं, बल्कि यह कहना ज़्यादा सही होगा कि वह जल्द अज़ जल्द मन्ज़र-ए-आम पर लाने का अज़्म मुसम्मम कर चुके हैं क्योंकि वह जिस काम में लगते हैं उसको पूरा किये बग़ैर चैन से नहीं बैठते, दूसरे अल्फ़ाज़ में यूँ कहा जा सकता है कि उन पर जुनूँ की सी कैफ़ियत तारी हो जाती है जो काम मुकम्मल होने के बाद ही ख़त्म होती है।

इससे क़ब्ल नआतों पर मुश्तमिल उन का शेरी मजमूआ ''अक़ीदत के फूल'' के नाम से शाये हो कर अदबी दुनिया में मक़बूल हो चुका है, उसके बाद ''चराग़-ए-ग़ज़ल'' ग़ज़लों पर मुश्तमिल उनका मजमूआ अभी कुछ अरसा क़ब्ल ही मन्ज़रे आम पर आया है जो उर्दू अदब के शेरी सरमाये के इज़ाफ़े की हैसियत रखता है।

''दिलबर'' साहब का जो नया शेरी मजमूआ ''तौसीफ़-ए-हक़'' जल्द ही मन्ज़रे आम पर आने वाला है उसके तमाम अश्आर तो बहर हाल मेरी नज़र से नहीं गुज़रे क्योंकि मुझे

तो रफ़ीक़े मोहतरम मो0 लईक अन्सारी साहब ने तक़रीबन सौ अश्आर भेजकर यह हुक्म सादिर फ़रमाया कि इशाअत के मराहिल से गुज़र रहे हम्दिया अश्आर पर मुश्तमिल "दिलबर" साहब के शेअरी मजमूए के लिये कुछ लिखकर हम भेज दें। लिहाज़ा हुक्म की तामील में अपनी खुशनसीबी समझते हुये मुख़्तसर सा मज़मून लिख रहा हूँ। मो0 लईक़ अन्सारी का नाम दुनियाए अदब में मोहताज–ए–तआरूफ़ नहीं क्योंकि वह एक अच्छे शायर ही नहीं बल्कि अच्छे नस्र निगार भी हैं।

मैं लाग लपेट के बग़ैर ऐतमाद के साथ यह कह सकता हूँ कि इन्शाअल्लाह "दिलबर" साहब का यह मजमूआ "तौसीफ़–ए–हक़" शेरी मैदान में एक अहम और मुफ़ीद इज़ाफ़ा साबित होगा। "दिलबर" साहब को सिर्फ़ शेरगोई पर ही कुदरत हासिल नहीं बल्कि इस्लामियात का भी अच्छा इल्म रखते हैं, कुरआन मजीद में "व नहनु अक़रबु इलैहि मिन हब्लिलवरीद" (और हम शह रग से ज़्यादा उससे नज़दीक हैं) इस आयत को पेशे नज़र रखते हुये "दिलबर" साहब का यह शेर देखिये:–

तू रगे जाँ से भी है नज़दीक मेरे जिस्म में
बस इसी निस्बत से मुझको ज़िन्दगी अच्छी लगी
हम्द लिखने का शरफ़ जब तूने बख़्शा ऐ खुदा
तब कहीं जाकर मुझे यह शायरी अच्छी लगी

तमाम मख़्लूक़ात खुदा तआला की हम्द व तस्बीह अपने–अपने अन्दाज़ में अपनी–अपनी ज़बान में बयान करती हैं। "दिलबर" साहब ने भी हम्दिया अश्आर शुक्राने के तौर पर लिखे हैं, इस बात को पेशे नज़र रखते हुये कि "लइन शकरतुम

लअज़ीदन नकुम वलइन कफ़रतुम इन्ना अज़ाबी लशदीद" (ऐ मेरी मख़्लूक़ अगर तुम ने शुक्र अदा किया तो इन्आमात में इज़ाफ़ा करूँगा और अगर तुमने नाशुक्री की तो जान लो मेरा अज़ाब सख़्त है।) "दिलबर" साहब के चन्द अश्आर देखिये जिन में उनके अन्दाज़े शेरगोई, उनकी सादा मिज़ाजी, शरीफुन्नफ़सी और उनके एहसासात और जज़्बात को देखा जा सकता है:–

या इलाही तू मुझे इल्म की दौलत दे दे
अपने बन्दों के लिये दिल में मुहब्बत दे दे
मैं कभी राह–ए–सदाकत से न भटकूँ मौला
रहबरी के लिये सरकार की सीरत दे दे

तू ने दुनिया अजब बनाई है
यह तेरी शान–ए–किब्रियाई है
देखता हूँ जिधर भी दुनिया में
या खुदा तेरी ही खुदाई है

तेरी याद ऐसे असर कर गई है
कि खुद से मुझे बेखबर कर गई है
मेरी ज़िन्दगी में कभी कम न होगी
मोहब्बत तेरी दिल में घर कर गई है
जो "दिलबर" को बख़्शी है खू–ए–निदामत
वही उसको बा चश्म–ए–तर कर गई है

उरूजे फ़हमे बशर ला इलाहा इल्लल्लाह
ज़ियाए क़ल्बो नज़र ला इलाहा इल्लल्लाह
नसीब होंगी तुझे दो जहान की खुशियाँ
कहे जा शाम ओ सहर ला इलाहा इल्लल्लाह
करम है उस का मेरे फ़हमो दिल पे ऐ ''दिलबर''
मेरी मताअ–ए–हुनर ला इलाहा इल्लल्लाह

''दिलबर'' साहब एक इन्सान दोस्त, हमदर्द, इन्सानियत का दर्द रखने वाले अपने मोहसिन के इनामात़ व एहसानात को याद रखने वाले एक ऐसे ही शख्स हैं जिन्हें शेर गोई पर कुदरत हासिल है, उनकी शायरी सलासत व रवानी, सादा बयानी और फ़िक्र व सोच और उन के दिली तअस्सुरात व जज़्बात की आईनादार है, अपने मोहसिन हक़ीक़ी के प्रति उनके जो जज़्बात और तअस्सुरात हैं उनका इज़्हार उन्होंने अपनी इस कि़ताब ''तौसीफ़–ए–हक़'' में किया है:–

सब से अफ़ज़ल है सिर्फ़ ज़ात तेरी
तू है ख़ालिक़ ये कायनात तेरी
कल्ब दिलबर को है यक़ीन यारब
है वहदहु ला शरीक ज़ात तेरी

सरोन्ज (एम. पी.)

शिव बहादुर सिंह की हम्दिया शायरी

डा0 सैफ़ी सरोन्जी

मेरा यह मानना है कि दुनिया में कोई शख़्स ऐसा नहीं जो खुदा से न डरता हो चाहे वह जिस मज़हब से तअल्लुक़ रखता हो, हाँ तरीके अलग–अलग हो सकते हैं लेकिन खुदा का ख़ौफ़ हर दिल में होता है। इत्तिफ़ाक़ से कोई बला या ज़लज़ला आ जाये तो वह लोग जो किसी चीज़ को पूजते हैं वह भी सिर्फ़ ईश्वर या खुदा को ही पुकारते हैं यू. पी. के मशहूर शायर शिव बहादुर सिंह "दिलबर" एक ऐसे ही शायर हैं जिन का दिल खौफ–ए–खुदा और उसकी मुहब्बत से भरा हुआ है। उनकी हम्दिया शायरी पढ़ने के बाद यह बात यक़ीन से कही जा सकती है कि उनका दिल खुदा के इश्क से सरशार है। मिसाल के तौर पर यहाँ शेर पेश करता हूँ:–

आदम की पेशानी चमकी नूर से तेरे ऐ मालिक
जिस्म है ख़ाकी फिर भी हर दम महका–महका रहता हूँ
जिसदिन से एहसास हुआ है अपने गुनाहों का "दिलबर"
उसके ग़ज़ब से डरता हूँ और सहमा–सहमा रहता हूँ

मैं तेरी हम्द लिखना चाहता हूँ
मुक़द्दर को बनाना चाहता हूँ
ज़माने की निगाहों से छुपाकर
तुझे इस दिल में रखना चाहता हूँ

या इलाही तू मुझे इल्म की दौलत दे दे
अपने बन्दों के लिये दिल में मुहब्बत दे दे
मैं कभी राह ए सदाकत से न भटकूँ मौला
रहबरी के लिये सरकार की सीरत दे दे

गो दूर तेरी याद से यह ज़िन्दगी रही
लेकिन तेरे करम में न कोई कमी रही
"दिलबर" रहा न कोई अन्धेरा हयात में
जब यादे रब की दिल में मेरे रोशनी रही

बशर जब तुझ से बेगाना हुआ है
ज़माने में बहुत रुस्वा हुआ है
तेरी चश्म–ए–इनायत से मुनव्वर
मेरी हस्ती का हर गोशा हुआ है

एक ग़ैर मुस्लिम शायर के दिल से निकले हुये अशआर हमारे ईमान को न सिर्फ ताज़ा करते हैं बल्कि हमें एहसास भी दिलाते हैं कि खुदा की हम्द करने वाली तमाम मख़्लूक चरिन्द व

परिन्द, और दीगर जानदार चीज़ें तो आज भी उसके गुन गाते हैं लेकिन एक इन्सान ही ऐसा नाशुक्रा वाक़े हुआ है कि वह उसे मानता तो है लेकिन उस का शुक्र अदा नहीं करता शिव बहादुर सिंह की हम्दिया शायरी में बड़ी खुसूसियत यही है कि उन्हें जहाँ एक तरफ़ खुदा के हुज़ूर अपने गुनाहों का एतिराफ़ किया है वहीं दूसरी तरफ़ दिल से खुदा का शुक्र भी अदा किया है और हम्द की सबसे बड़ी खूबी यही होती है कि शायर के दिल में उसके एहसासों और मेहरबानियों से जो जज़्बा उभरता है जो कैफ़ियत उस पर तारी होती है उसका मुकम्मल इज़्हार किया जाये और शिव बहादुर "दिलबर" की हम्दिया शायरी में यह बात जगह-जगह देखी जा सकती है उनके दिल में खुदा के लिये मुहब्बत का जो जज़्बा उभरता है वह उन्होंने अपनी पूरी कैफ़ियत के साथ क़िरतास पर बिखरा दिये हैं कुछ शेर देखियेः–

आरिफ–ए–खालिक–ए–दो जहाँ हो गई
ज़िन्दगानी मेरी जाविदाँ हो गई
तू जो आया तसव्वुर में आलम ये था
गुन्ग हैबत से अपनी ज़बाँ हो गई

ग़मों की भीड़ में लाज़िम है आदमी के लिये
तेरा खयाल ज़रूरी है ज़िन्दगी के लिये
वह बदनसीब तुझ से रहे जो बेगाना
तेरा करम तो है दुनिया में हर किसी के लिये

तू ने दुनिया अजब बनाई है
यह तेरी शान–ए–किब्रियाई है
देखता हूँ जिधर भी दुनिया में
या खुदा तेरी ही खुदाई है

शिव बहादुर सिंह के इन हम्दिया अशआर में खौफ़े खुदा भी है और जज़्बा–ए–शुक्र भी है यक़ीनन शिव बहादुर सिंह का हम्दिया कलाम किताबी शक्ल में आने के बाद और भी ज़्यादा पढ़ा और पसन्द किया जायेगा और निजात का वसीला भी बन जायेगा।

मुदीर सहमाही 'इन्तिसाब'
सरोन्ज (एम.पी.)

अपनी बात

शिव बहादुर सिंह "दिलबर"

मेरा जन्म रायबरेली जिले के अन्तर्गत ग्राम उदवामऊ, पो0 विष्णु खेड़ा, थाना व तहसील लालगंज में 20 जनवरी 1952 को हुआ था। स्कूली शिक्षा इण्टरमीडिएट तक गाँव और लालगंज कस्बे से प्राप्त किया। उसके बाद नौकरी में आने के पश्चात प्राइवेट छात्र की हैसियत से बी0 ए0 तथा एम0 ए0 (अर्थशास्त्र)की परीक्षायें पास कीं एवं सन 2001 में अदीब कामिल (उर्दू) की परीक्षा पास की और इस प्रकार विशेष तौर पर उर्दू अदब से जुड़ गया। उर्दू भाषा से वालेहाना लगाव तो बचपन से था लेकिन नौकरी के दौरान कुछ उर्दू भाषी दोस्तों के सम्पर्क में आने पर मुझ में उर्दू भाषा के प्रति विशेष चाव पैदा हुआ।

इसके पूर्व प्रकाशित अपनी दो पुस्तकों "अक़ीदत के फूल"(नआतिया संकलन) और "चराग़–ए–ग़ज़ल"(ग़ज़लों का संकलन) में अपने विषय में बहुत कुछ लिख चुका हूँ। अब पुनः उसकी पुनरावृत्ति नहीं करना चाहता। संक्षेप में मात्र इतना उल्लेख करना चाहता हूँ कि मेरा बचपन बड़ी कठिनाइयों में व्यतीत हुआ। हालाँकि मेरे स्वर्गीय पिता श्री जगन्नाथ सिंह एवं श्रद्धेया माता जी स्वर्गीया श्रीमती सीता देवी ने अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में मुझे पाला–पोसा, बड़ा किया और सच्चे मानवीय मूल्यों के अन्तर्गत मेरा भरपूर मार्गदर्शन किया।

अपने इस तीसरे प्रकाशन "तौसीफ़–ए–हक़"(ईश्वर की तारीफ़) के बारे में यह उल्लेख करना चाहता हूँ कि एक प्रसिद्धि

है कि "ठाकुर भगत न मूसर धनुही" अर्थात न तो ठाकुर (क्षत्रिय) भक्त हो सकता है और न मूसल धनुष बन सकता है लेकिन मेरा परिवार इसका अपवाद रहा है। मेरे परदादा (बाबा के पिता जी) स्वर्गीय श्री शंकर सिंह माँ दुर्गा के परम भक्त थे। माँ दुर्गा की उन पर विशेष कृपा थी। अपने जीवन काल में वह अमर सेनानी राणा बेनी माधव सिंह की सेना में विशेष ओहदे पर रहे और अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण राणा साहब के बहुत करीब रहे। उसके बाद अपने क्षेत्र के मुखिया रहे और सदैव लोगों की भलाई करते रहने के कारण सभी के चहेते रहे। उनका देहावसान गणेश चतुर्थी के दिन शाम को आठ बजे के आस पास हुआ था। मृत्यु से पूर्व उन्होंने आशीर्वाद स्वरूप मेरे बाबा स्वर्गीय श्री राम औतार सिंह से यह कहा था कि तुम्हारे बड़े लड़के (मेरे पिता जी) का पहला पुत्र अर्थात मैं स्वयं उनके व्यक्तित्व का दर्पण होगा और इस प्रकार मुझे अध्यात्म संस्कार स्वरूप उनके अशीर्वाद से प्राप्त हुआ।

इस प्रकार बचपन से ही मेरी प्रवृत्ति आध्यात्मिक रही जिसे मैंने जीवन में कार्यरूप में परिणित कर इसकी गहराइयों का ज्ञान प्राप्त कर जीवन जीने की कला सीखी। परिणाम स्वरूप मेरे जीवन में बड़ी आसानियाँ उत्पन्न हुई और ईश्वर की कृपा से मुझे वह सब कुछ प्राप्त हुआ जो एक इन्सान को संतोषप्रद जीवन जीने के लिये मिलना चाहिये। यही कारण है कि आज ज़िन्दगी के जिस मुकाम पर खड़ा हूँ, वहाँ मैं पूर्ण रूप से संतुष्ट हूँ। मुझे दुनिया, जीवन किसी इन्सान आदि से कोई शिकायत नहीं है। मेरे साथ जुड़ी हुई इस दुनिया की हर चीज़ से मुझे भरपूर सहयोग

मिला और मैंने भी सब के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने का हर सम्भव प्रयास किया और सफ़ल रहा।

अन्त में मैं अपने काव्य गुरू आदरणीय हाजी वहीद खाँ साहब के प्रति विशेष कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्हों ने मेरी रचनात्मक क्षमता को एक दिशा प्रदान कर उसे सजाया, सँवारा और निखारा तथा इस लायक बनाया कि मैं साहित्यिक क्षेत्रों में अपना योगदान देने के काबिल हो सका। साथ ही अपने प्रेरणा स्रोत भाई समान जनाब लईक अन्सारी के प्रति विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ जो सदैव समर्पित भाव से मेरे साहित्यिक सृजन में मुझ पर बराबर उपकार करते रहते हैं। इसके अलावा मैं जनाब दानिश रायबरेलवी जी का भी आभार मानता हूँ जो बड़ी लगन और तत्परता से समय समय पर मेरा विशेष सहयोग करते रहते हैं और आखिर में मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती रामेश्वरी सिंह के योगदान की भी भूरि–भूरि प्रशंसा करता हूँ कि उन्हों ने कभी भी मेरी साहित्यिक गतिविधियों में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं उत्पन्न किया और हर स्तर पर मुझे हौसला और अपना सहयोग प्रदान किया।

मेरा यह आध्यात्मिक संकलन अब आपके हाथों में है। मैंने जो अनुभव किया और जिस पर चलकर मुझे एक संतोषप्रद एवं सानन्द जीवन की प्राप्ति हुई, उसे आपकी सेवा में इस विश्वास के साथ समर्पित कर रहा हूँ कि जन मानस इससे लाभान्वित होंगे और अपना आशीर्वाद प्रदान करेंगे तथा त्रुटियों के लिये मुझ अल्पवुद्धि को क्षमा करेंगे।

9, चन्द्रनगर, रायबरेली
मोबाइल:9336187402
8874784201

उरूज[1]-ए-फहम[2]-ए-बशर ला इलाहा[3] इल्लल्लाह ।
जेया[4]-ए-क़ल्ब-ओ-नजर ला इलाहा इल्लल्लाह ॥

जमीं भी उसकी, फ़लक उसका, कायनात उसकी ।
तो क्यों कहे न बशर ला इलाहा इल्लल्लाह ॥

उसी के हुक्म से जारी निज़ाम-ए-अर्ज[5]-ओ-समा ।
वजूद-ए-बर्ग-ओ-शजर ला इलाहा इल्लल्लाह ॥

ये कायनात की रौनक़ ये नज़्म-ए-आब-ओ-हवा ।
नमूद[6]-ए-जिन्न-ओ-बशर ला इलाहा इल्लल्लाह ॥

मेरी निगाह में माज़ी[7] है और मुस्तक़बिल[8] ।
ये दे रहे हैं ख़बर ला इलाहा इल्लल्लाह ॥

नसीब होंगी तुझे दो जहान की खुशियाँ ।
कहे जा शाम-ओ-सहर ला इलाहा इल्लल्लाह ॥

करम है उसका मेरे फ़हम-ओ-दिल पे ऐ "दिलबर"।
मेरी मता[9]-ए-हुनर ला इलाहा इल्लल्लाह ॥

1. उँचाई, 2. बुद्धि, 3. नहीं है कोई पूजने योग्य सिवा अल्लाह के,
4. प्रकाश, 5. जमीन और आसमान, 6. जाहिर होना
7. भूतकाल 8. भविष्य, 9. सम्पत्ति

मैं हूँ इन्सान तू विधाता है ।
हूँ भिखारी मैं तू ही दाता है ॥

जब सताते हैं गम जमाने के ।
सिर्फ़ इक तू ही याद आता है ॥

देखता हूँ कि बाग-ए-आलम में ।
गुल नये रोज तू खिलाता है ॥

तूने पैदा किये हैं शम्स[1]-ओ-क़मर ।
नज़्म[2]-ए-कुदरत तू ही चलाता है ॥

बज़्म-ए-आलम में रोशनी के लिये ।
इल्म[3] के तू दिये जलाता है ॥

जो समझता है मर्तबा[4] तेरा ।
बस वही तुझ से लौ लगाता है ॥

राज उसका अजीब है "दिलबर" ।
कब किसी की समझ में आता है ॥

1. सूर्य और चन्द्रमा 2. प्रकृति का कार्यक्रम
3. ज्ञान 4. स्तर

मेरे लबों पे जो माबूद[1] नाम है तेरा ।
मुझे समझती है दुनिया, गुलाम है तेरा ।।

जहाँ में जिन्न-ओ-बशर हों कि वो फ़रिश्ते हों ।
समझ सका न कोई, वो मक़ाम है तेरा ।।

कहीं पे बर्फ की ठंडक कहीं पे है गर्मी ।
जहाँ में हस्बे[2] - ए - जरूरत निजाम है तेरा ।।

जहाँ में सब के मुकद्दर बना दिये तूने ।
अजब निज़ाम, अजब इन्तज़ाम है तेरा ।।

वो खुश्क[3]-ओ-तर हों कि बर्ग[4]-ओ-शजर कि शम्स-ओ-क़मर ।
जहाँ में सब के लिये फ़ैज़[5] आम[6] है तेरा ।।

चलोगे राह जो सीधी, तो पाओगे जन्नत ।
जहाँ के वास्ते आसाँ पयाम[7] है तेरा ।।

तेरा करम है अगर सरफ़राज़[8] तू कर दे ।
जबान - ए - "दिलबर" - ए - आसी[9] पे नाम है तेरा ।।

1. पूज्य (ईश्वर), 2. आवश्यकतानुसार, 3. सूखा और गीला
4. पेड़ और पत्ते, 5. फ़ायदा (भलाई), 6. सामान्य
7. पैगाम (शिक्षा/संदेश) 8. इज़्ज़तदार, 9. गुनाहगार

मेरा सफ़ीना तेरे हवाले ।
चाहे डुबो दे चाहे बचा ले ॥

जी न सकूँगा पल भर या रब ।
दस्त[1]-ए-करम गर तू भी उठा ले ॥

तू जो न चाहे कौन बढ़ेगा ।
खुद को कोई लाख उछाले ॥

तेरी अता[2] है गम भी खुशी भी ।
तेरे अँधेरे, तेरे उजाले ॥

जो तू चाहेगा वो देगा ।
जोर बशर[3] कितना ही लगा ले ॥

उसका बिगाड़ेगी क्या दुनिया ।
जिसको तू दुनिया में सँभाले ॥

तेरा करम हो जाये या रब ।
"दिलबर" कुछ अपने को बना ले ॥

1. कृपा का हाथ, 2. देन (दिया गया), 3.इन्सान

कौन है जिसको भला तेरा सहारा न मिला ।
क्यों नजर को मेरी रहमत का नजारा न मिला ॥

मैं जो बरबाद हुआ हूँ तो कमी मेरी है ।
कैसे कह दूँ कि कभी तेरा इशारा न मिला ॥

एक मुद्दत से सफ़र में हैं रवाँ हम लेकिन ।
हम वो धारें हैं, कभी जिनको किनारा न मिला ॥

जिसने इक बार भी पी ली है तेरे प्यार की मय ।
उम्र भर उसको फिर इस मय का उतारा न मिला ॥

गम के मारों की तो इक भीड़ है इस दुनिया में ।
आप के गम का मगर एक भी मारा न मिला ॥

यूँ तो कहने को जमाने में हमारे हैं बहुत ।
इक मगर तेरे सिवा कोई हमारा न मिला ॥

तूने "दिलबर" को जो दी दीन की दौलत मौला ।
गम नहीं उसको कि फिर कोई सितारा न मिला ॥

तेरी यादों की खुशबू से महका-महका रहता हूँ ।
जिस दिन तेरी याद न आये सूना-सूना रहता हूँ ॥

आदम की पेशानी[1] चमकी नूर से तेरे ऐ मालिक ।
जिस्म है ख़ाकी फिर भी हरदम निखरा-निखरा रहता हूँ ॥

याद में तेरी रहता हूँ हर वक्त जो खोया-खोया सा ।
दुनिया वालों ने ये समझा उलझा-उलझा रहता हूँ ॥

ख़त्म हुई सब दिल की उमंगें जीवन सूना-सूना है ।
अपने-पराये कहते हैं सब बदला-बदला रहता हूँ ॥

तेरी उल्फत की सरमस्ती मुझ पे जो छाई रहती है ।
लोग समझ बैठे हैं यही मैं बहका-बहका रहता हूँ ॥

दुनिया वाले कुछ भी कहें लेकिन ये हक़ीक़त है मालिक ।
तेरी उल्फ़त के सागर में डूबा-डूबा रहता हूँ ॥

जिस दिन से एहसास हुआ है अपने गुनाहों का "दिलबर" ।
तेरे गजब से डरता हूँ और सहमा-सहमा रहता हूँ ॥

1. मस्तक

जहाँ में मेरे ख़ुदा का निजाम चलता है ।
करम से उसके हमारा भी काम चलता है ॥

यहाँ ख़ुलूस के सौदों का है चलन हर सू ।
न माल चलता है कोई, न दाम चलता है ॥

वो दौर है कि नहीं है हलाल की क़ीमत ।
बचा ले मुझको यहाँ पे हराम चलता है ॥

जो तेरी जात पे रहता है शाकिर[1]-ओ-साबिर ।
वही जमाने में बस शादकाम चलता है ॥

मेरी हयात का हासिल है तेरी याद ख़ुदा ।
यही तो सिलसिला हर सुब्ह-ओ-शाम चलता है ॥

उसी की राह से रहती है दूर हर मुश्किल ।
जो घर से ले के फ़क़त[2] तेरा नाम चलता है ॥

बुरा है या कि भला तेरा दास है "दिलबर" ।
लबों पे उसके फ़क़त तेरा नाम चलता है ॥

1. निर्भर रहने और धैर्य रखने वाला
2. सिर्फ़

ऐ खुदा जब से मुझे तेरा सहारा मिल गया ।
डूबने वाले सफ़ीने को किनारा मिल गया ॥

मैं समझता हूँ तेरा मुझ पर करम ये कम नहीं ।
पुर सुकूँ रहने का दुनिया में सहारा मिल गया ॥

बाग़-ए-जन्नत की तमन्ना अब नहीं बाक़ी रही ।
तू मिला तो बाग़-ए-ज़न्नत का नजारा मिल गया ॥

तेरी रहमत ने लिया है अपने दामन में उसे ।
जब कोई लाचार-ओ-मुफ़लिस ग़म का मारा मिल गया ॥

मक़सद-ए-हस्ती किसी से पूछने जाऊँ मैं क्यों ।
जब कि तुझ से जिन्दगी का भेद सारा मिल गया ॥

अब ग़म-ए-दुनिया मेरे दिल के क़रीं आता नहीं ।
जब से तेरी चश्म-ए-रहमत का सहारा मिल गया ॥

ज़ुल्मतें सारी दिल-ए-"दिलबर" से रुख़सत हो गई ।
तेरी रहमत का चमकता जब सितारा मिल गया ॥

दर पे तुम्हारे आया हूँ मैं अश्कों की बौछार लिये ।
अपने साज-ए-दिल का या रब टूटा हुआ हर तार लिये ॥

एक नहीं दो-चार भी हों तो कहने की कुछ हिम्मत हो ।
दर पे तेरे मैं तो ग़मों का आया हूँ अम्बार लिये ॥

जीवन के इस लम्बे सफर में या रब किसको मीत कहूँ ।
मुझको जो भी मिलता है वो अपना अलग किरदार लिये ॥

प्यार-ओ-मोहब्बत का मन्जर हो, बुग़्ज़[1]-ओ-हसद से दूर रहे ।
मेरे दिल का हर जज़्बा हो सीरत के अनवार लिये ॥

माल-ओ-दौलत, ऐश[2]-ओ-तरब की कोई मुझको चाह नहीं ।
तुझ से माँगूँ तेरी रजा मैं दिल में तेरा प्यार लिये ॥

दर-दर की ठोकर मैं खा कर आया हूँ दर पे तेरे ।
दिल में तुझ से आस लगाये ज़ख़्मों का अम्बार लिये ॥

तेरे करम की आस लगाये दर पे तेरे आया है ।
दुनिया वालों ने जो बख़्शा "दिलबर" को वो ख़ार लिये ॥

1. ईर्ष्या-द्वेष 2. मौज-मस्ती

मैं तेरी हम्द लिखना चाहता हूँ ।
मुक़द्दर को बनाना चाहता हूँ ॥

जो आख़िर तक बने मेरा ठिकाना ।
मैं ऐसा ही ठिकाना चाहता हूँ ॥

मेरे मालिक तू मुझको हौसला दे ।
सभी के काम आना चाहता हूँ ॥

मिलें ख़ुशियाँ तो उनका ख़ैर[1] मक़दम ।
मिले जो गम उठाना चाहता हूँ ॥

जमाने की निगाहों से छुपा कर ।
तुझे इस दिल में रखना चाहता हूँ ॥

तेरी यादों के गुल दिल में खिला कर ।
मैं दुनिया में महकना चाहता हूँ ॥

नहीं सुनती है दर्द-ए-दिल जो दुनिया ।
तुझे "दिलबर" सुनाना चाहता हूँ ॥

1. स्वागत

हमारे दिल में खुदा अपना प्यार रहने दे ।
इसे जमाने के हर गम से आर[1] रहने दे ॥

मेरे वजूद में बस एक अपनी कुरबत का ।
हर इक नफ़स पे जो खटके, वो ख़ार रहने दे ॥

यही दुआ है कि जब तक है जिन्दगी अपनी ।
वफ़ा[2] शेआर-ओ-इताअत[3] शेआर रहने दे ॥

मुझे है तेरी मोहब्बत के आसरे की तलब ।
जो हैं असीर[4]-ए-गम-ए-रोजगार, रहने दे ॥

हर इक बशर को जहाँ में नसीब हों खुशियाँ ।
दुआ लबों पे ये परवरदिगार रहने दे ॥

वतन परस्ती-ओ-हक़[5] आगही का ये जज़्बा ।
मेरे वजूद में लैल[6]-ओ-निहार रहने दे ॥

तुझे भुला न सके उम्र भर कभी "दिलबर" ।
तू उसके हिस्से में गम बेशुमार रहने दे ॥

1. परहेज (बचना) 2. वफ़ादार 3. हुक्म मानने वाला
4. कैद 5. सच्चाई को जानना 6. रात-दिन

तलब नहीं है कुछ इसकी मुझे खुशी दे दे ।
दुआ है तुझ से खुदा जौक[1]-ए-बन्दगी दे दे ॥

किसी को गैर न समझूँ कभी जमाने में ।
मेरे वजूद को एहसास-ए-मुखलिसी[2] दे दे ॥

जहाँ में बर्ग-ओ-शजर से भी उन्सियत[3] हो मुझे ।
तू मेरे जर्फ[4] को ईसार-ए-सरमदी[5] दे दे ॥

भटक गये हैं जो इन्सानियत की राहों से ।
रह-ए-खुलूस की तू उनको आगही दे दे ॥

जहाँ में जिससे बढ़े भाईचारगी की फ़ज़ा ।
हर इक बशर की जबाँ को वो चाशनी[6] दे दे ॥

तमाम उम्र न इक लम्हा तुझको भूल सकूँ ।
मेरे शोऊर को कुछ ऐसी पुख़्तगी दे दे ॥

दुआ है तुझ से ये परवरदिगार "दिलबर" की ।
जहाँ में सब को तू राहत की जिन्दगी दे दे ॥

1. पूजा का शौक, 2. सच्चाई, 3. प्यार 4. हौसला
5. वह काम जिसके करने से आत्मिक शांति मिले 6. मिठास

अहले[1]-ए-आलम पे है एहसान ये रहमत तेरी ।
आसमाँ तेरा, जमीं तेरी है, जन्नत तेरी ॥

डगमगाती नहीं दुनिया की मोहब्बत उन को ।
दिल में रहती है सदा जिन के भी चाहत तेरी ॥

उनको कौनेन की दौलत से भला क्या मतलब ।
बख़्त[2] से जिनको मयस्सर है मोहब्बत तेरी ॥

ग़म जमाने के सतायेंगे भला क्या उनको ।
शादमाँ[3] रखती है जिन लोगों को चाहत तेरी ॥

वो तेरी जात पे करते हैं भरोसा हर दम ।
या ख़ुदा जिन को भी मालूम है अजमत[4] तेरी ॥

अपने बन्दों पे तू मायल[5] ब करम है हरदम ।
तू है रहमान[6] ये दुनिया भी है रहमत तेरी ॥

क्यों, परेशान हो "दिलबर", कि यक़ीं है उसको ।
अब्दियत[7] की है निगहबान[8] मोहब्बत तेरी ॥

1. सारी दुनिया, 2. भाग्य, 3. ख़ुशहाल,
4. बड़ाई 5. कृपा करने वाला, 6. मेहरबानी करने वाला
7. सदैव (हमेशा) 8. चौकीदार (रखवाला)

लोग जो रब की राह चले हैं ।
जीवन में वो जाग रहे हैं ॥

राह दिखा दे मुझको या रब ।
ग़म के अँधेरों के डेरे हैं ॥

बार[1]-ए-गुनाह से काँधे बोझिल ।
छाले भी पावों में पड़े हैं ॥

जुल्म-ओ-सितम ढाये दुनिया ने ।
जब तेरी राहों पे चले हैं ॥

हो कर तेरे बन्दे या रब ।
लालच के दलदल में फँसे हैं ॥

पार लगा दे या रब कश्ती ।
भव सागर मझधार पड़े हैं ॥

क्या बतलायें "दिलबर" अक्सर ।
रोये बहुत कहने को हँसे हैं ॥

1. गुनाहों का बोझ

या इलाही तू मुझे इल्म की दौलत दे दे ।
अपने बन्दों के लिये दिल में मोहब्बत दे दे ॥

जिन्दगी पाक हर इक ऐब से गुजरे मौला ।
अपने महबूब[स0] की सीरत की तू उल्फ़त दे दे ॥

भूल जाऊँगा जमाने को हमेशा के लिये ।
तू अगर दिल को मेरे कैफ़[1]-ए-इबादत दे दे ॥

मैं कभी राह[2]-ए-सदाक़त से न भटकूँ मौला ।
रहबरी के लिये सरकार[स0] की सीरत दे दे ॥

ख़्वाब[3]-ए-गफ़लत से जो बेदार[4] करे मुझको सदा ।
या ख़ुदा मुझको वो ईमान की दौलत दे दे ॥

जिनकी ख़िदमत से हुआ करता है राजी तू भी ।
मुझको माँ-बाप का वो जज़्ब[5]-ए-ख़िदमत दे दे ॥

मिस्ल-ए-दीवाना भटकता है अजल से "दिलबर" ।
अपनी रहमत की नजर कर उसे राहत दे दे ॥

1. ईश्वर भक्ति का नशा, 2. सच्चाई की राह,
3. लापरवाही का स्वप्न, 4. जागना
5. सेवाभाव

शजर तूने बनाये हैं हजर तूने बनाये हैं ।
जहान[1]-ए-कुनफ़ेकाँ में खुश्क-ओ-तर तूने बनाये हैं ॥

तेरी तख़्लीक़[2] ये दुनिया बहुत ही ख़ूबसूरत है ।
बरा[3]-ए-रोशनी शम्स-ओ-क़मर तूने बनाये हैं ॥

जो इनको देखता है इन पे हो जाता है वो शैदा[4] ।
नज़ारे[5] ख़ूबसूरत इस क़दर तूने बनाये हैं ॥

तेरी मख़लूक़[6] को या रब जहाँ पर चैन मिलता है ।
जहाँ में पुर सुकूँ वो बाम[7]-ओ-दर तूने बनाये हैं ॥

बशर के वास्ते कुरबान कर देते हैं जाँ अपनी ।
खुदावन्दा कुछ ऐसे जानवर तूने बनाये हैं ॥

मिला करता है मक़सद जीस्त[8] का वो जिन में इन्साँ को ।
वो लम्हे जिन्दगी के मोतबर[9] तूने बनाये हैं ॥

तेरे जलवे तो "दिलबर" देखता है जर्रे-जर्रे में ।
बनाने को हसीं तो बाम-ओ-दर तूने बनाये हैं ॥

1. दुनिया, 2. रचना, 3. उजाले के लिये,
4. फ़िदा (आशिक़), 5. दृश्य, 6. सृष्टि,
7. कोठा और दरवाजा, 8. जिन्दगी, 9. भरोसे के क़ाबिल

ख़ुद अपना कमाल-ए-हुनर रख दिया है ।
जिसे नाम तूने बशर रख दिया है ॥

बनाया ख़लीफ़ा[1] जो इन्साँ को तूने ।
तो उसमें दिमाग़-ए-हुनर रख दिया है ॥

बनाया है इन्साँ को अफ़ज़ल[2] जो तूने ।
तो उसमें दिल-ए-मोतबर रख दिया है ॥

इबादत को अपनी ख़ुदाया जहाँ में ।
शब[3]-ओ-रोज़, शाम-ओ-सहर रख दिया है ॥

किया है करम तूने, बन्दों ने जिस दम ।
तेरे आस्ताने[4] पे सर रख दिया है ॥

बशर जिन से पाता है राहत जहाँ में ।
मनाज़िर में ऐसा असर रख दिया है ॥

करम ख़ास "दिलबर" पे तेरा है, तूने ।
जो उसमें शोऊर-ए-हुनर रख दिया है ॥

1. नायब, 2. उत्तम,
3. रात और दिन, 4. चौखट (ड्योढ़ी)

तेरी खुशबू, फूल भी तेरे, तेरी ही फुलवारी है ।
मेरे मालिक तेरी दुनिया कितनी हसीं है, प्यारी है ॥

तरह- तरह के फूल खिलाये तूने गुलशन-ए-आलम में ।
तेरे करम से हरी-भरी इस दुनिया की हर क्यारी है ॥

धूप भी तेरी, छाँव भी तेरी, रातें तेरी, दिन तेरे ।
नज़्म-ए-जहाँ में मेरे मालिक, हुक्म तेरा ही जारी है ॥

राई को तू पर्वत कर दे, पर्वत को राई कर दे ।
दुनिया क्या है मेरे मालिक तेरी कारगुजारी है ॥

जान न पाया तुझ को इन्साँ इल्म से अपने या मौला ।
फ़हम[1]-ए-बशर से बाला है तू, तेरी लीला न्यारी है ॥

ग्यानी या विग्यानी हों वो, सूफ़ी हों या आलिम हों ।
तेरी कुदरत की ऐ मालिक क़ायल दुनिया सारी है ॥

राह-ए-खुदा से भटके हैं वो, "दिलबर" जो ये समझे हैं ।
इस दुनिया में रब के सिवा उनकी भी ठेकेदारी है ॥

1. इन्सान की समझ

तूने दुनिया अजब बनाई है ।
ये तेरी शान-ए-किब्रियाई[1] है ॥

कर गई है वो बाग़-बाग़ मुझे ।
जिस घड़ी तेरी याद आई है ॥

देखता हूँ जिधर भी दुनिया में ।
या ख़ुदा तेरी ही ख़ुदाई है ॥

सारे आलम से बेनयाज़ हुआ ।
जिसने भी तुझ से लौ लगाई है ॥

बस में इन्सान के नहीं कुछ भी ।
मेरे मालिक तेरी दुहाई है ॥

कर के इन्साँ पे अपनी चश्म-ए-करम ।
शान-ए-इन्सानियत बढ़ाई है ॥

दिल में "दिलबर" के आके देख ज़रा ।
बज़्म[2] तेरे लिये सजाई है ॥

1. ख़ुदाई, 2. महफ़िल

गो दूर तेरी याद से ये जिन्दगी रही ।
लेकिन तेरे करम में न कोई कमी रही ॥

दुनिया की जो तलब में मिली थी, हुई फ़ना[1] ।
तूने ख़ुशी जो दी थी वही दायमी[2] रही ॥

लमहात जिन्दगी के रहे वो बहुत हसीं ।
जिनमें कि तेरी याद, तेरी बन्दगी रही ॥

दुनिया की कौन शय है जो उनको नहीं मिली ।
इक तेरी ज़ात से जिन्हें वाबस्तगी रही ॥

यूँ तो ग़मों की भीड़ में थी जिन्दगी मगर ।
लेकिन तेरे ख़याल से आसूदगी[3] रही ॥

हर शय तेरे वजूद की मज़हर[4] है दहर[5] में ।
पुर नूर तेरी ज़ात से हर इक सदी रही ॥

"दिलबर" रहा न कोई अँधेरा हयात[6] में ।
जब याद-ए-रब की दिल में मेरे रोशनी रही ॥

1. समाप्त, 2. स्थाई, 3. राहत,
4. धारण करने वाला, 5. दुनिया, 6. जिन्दगी

जरा गुनाहों पे जी भर के मुझ को रोने दे ।
जो दाग़ दिल पे गुनाहों के हैं वो धोने दे ॥

समझ रहा हूँ कि पादाश[1] है गुनाहों की ।
मैं ढो रहा हूँ मुझे गम का बार[2] ढोने दे ॥

ये इल्तजा है कि अब बहर-ए-इश्क़ में तेरी ।
हयात अपनी डुबोता हूँ मैं, डुबोने दे ॥

इबादतों पे जो तेरे करम की है बारिश ।
उसी से जीस्त का इक-इक गुनाह धोने दे ॥

रह-ए-हयात चमक उट्ठे कहकशाँ[3] की तरह ।
करम से बारिश-ए-अनवार उस पे होने दे ॥

तेरे क़रीब जो लायें मेरे ख़यालों को ।
मेरी नजर को मनाजिर वही सलोने दे ॥

खुदा-ए-पाक का जो नाम ले के सोये हैं ।
उन्हें सुकून है, "दिलबर" तू उनको सोने दे ॥

1.बदला, 2. बोझ,
3. छोटे-छोटे नक्षत्रों की क़तार

लोग कुछ समझें मगर तेरी हक़ीक़त और कुछ ।
चाहती मख़लूक़ से है तेरी उल्फ़त और कुछ ॥

मावेरा[1]-ए-ख़्वाहिश-ए-दुनिया जो होती है अदा ।
बिलयक़ीं[2] या रब वो है तेरी इबादत[3] और कुछ ॥

क़ल्ब[4] जिसका तेरी चाहत से मुज़य्यन[5] हो गया ।
उसके दिल में हो नहीं सकती है चाहत और कुछ ॥

जिसने तेरी ज़ात से जोड़ा है रिश्ता ऐ ख़ुदा ।
आम इन्साँ की नहीं उसकी है फ़ितरत और कुछ ।

हो गया है चाह में तेरी जो दीवाना यहाँ ।
बज़्म[6]-ए-आलम में रही उसको न हाजत[7] और कुछ ॥

इल्म से अपने ज़माने में भला समझे वो क्या ।
फ़हम-ए-इन्साँ से परे है शान-ए-क़ुदरत और कुछ ॥

मुतमइन[8] "दिलबर" को तेरे रखती है हर हाल में ।
ऐ ख़ुदा वो है तेरी चश्म-ए-इनायत और कुछ ॥

1. दुनिया की चाहत के अलावा, 2. वास्तव में (निश्चय ही),
3. आराधना, 4. ह्रदय (दिल), 5. ख़ूबसूरत,
6. दुनिया, 7. आवश्यकता, 8. संतुष्ट

राह से तेरी जैसे-जैसे इन्साँ हटता जायेगा ।
जीस्त में उसकी ग़म का अँधेरा पैहम[1] बढ़ता जायेगा ॥

अस्र[2]-ए-रवाँ के इन्सानों की फ़िक्र बदल दे ऐ मौला ।
अम्न[3]-ओ-अमाँ का सूरज वरना जग में ढलता जायेगा ॥

इल्म[4]-ओ-यक़ीं की दौलत देकर कर दे तू बेदार इन्हें ।
गुमराही के ग़ार[5] में वरना इन्साँ गिरता जायेगा ॥

चश्म[6]-ए-इनायत जिस पर तेरी हो जायेगी दुनिया में ।
राह-ए-वफ़ा को अपनायेगा आगे बढ़ता जायेगा ॥

जिसने तेरी राह पे या रब चल के गुजारा है जीवन ।
आया था दुनिया में वो रोता लेकिन हँसता जायेगा ॥

तेरी मर्जी, हुक्म पे तेरे जो भी चलेगा दुनिया में ।
नूर से तेरे उसका चेहरा दिन-दिन खिलता जायेगा ॥

जेहन-ओ-दिल दुनिया में होंगे रोशन उसके ऐ "दिलबर" ।
रब के इल्म की धूप में जो भी पैहम तपता जायेगा ॥

1.लगातार, 2. वर्तमान, 3. चैन (आराम) और सुरक्षा
4. ज्ञान और विश्वास 5. गड्ढा, 6. कृपा दृष्टि

तुझ से जो बा ख़बर नहीं होता ।
आदमी मोतबर नहीं होता ।।

जिन्दगी और मौत बस में तेरे ।
कोई भी चारागर[1] नहीं होता ।।

तेरे दीवाने से बड़ा हरगिज़ ।
कोई भी ताजवर नहीं होता ।।

तेरी कुदरत से बेनयाज़[2] कभी ।
कोई अहल[3]-ए-नजर नहीं होता ।।

तेरे जलवे हैं हर तरफ वरना ।
ये जहाँ मोतबर[4] नहीं होता ।।

तूने सब को सिखाये इल्म-ओ-हुनर ।
कोई खुद बा हुनर नहीं होता ।।

गर न झुकता ये तेरी चौखट पर ।
पाक "दिलबर" का सर नहीं होता ।।

1. डाक्टर, 2. लापरवाह,
3. विद्वान, 4. विश्वसनीय

याद आई तेरी और मुझे सरशार[1] कर गई ।
अन्जानी सी खुशी कोई रग-रग में भर गई ॥

वो खो गया है तेरे तसव्वुर में फिर यहाँ ।
जिसकी निगाह जलवों पे तेरे ठहर गई ॥

चाहा है सिदक़[2] दिल से तुझे जिसने भी खुदा ।
हस्ती उसी की बज़्म-ए-जहाँ में सँवर गई ॥

तेरी रज़ा[3] पे जिसने बसर की है जिन्दगी ।
दुनिया के साथ उक़बा[4] भी उसकी सँवर गई ॥

उल्फ़त में तेरी ऐ खुदा महसूस ये हुआ ।
आई हयात बेख़बर और बा ख़बर गई ॥

इन्सान हो के भूल गया जो तुझे यहाँ ।
उसकी हयात को था बिखरना, बिखर गई ॥

दुनिया-ए-हुस्न-ओ-इश्क़ में "दिलबर" नहीं फँसा ।
उसकी निगाह सिर्फ़ तेरे हुस्न पर गई ॥

1.मस्त, 2. सच्चे,
3. मर्जी, 4. आक़बत (आख़िरत)

तेरी यादों के सहारे जागते-सोते हुये ।
कट रही है जिन्दगी अपनी यहाँ हँसते हुये ॥

मेहरबाँ तू जिस पे था वो उम्र भर हँसता रहा ।
तेरी यादों के सहारे बार[1]-ए-गम ढोते हुये ॥

राह-ए-हक़ से वो नहीं भटका है दुनिया में कभी ।
जिन्दगी जिसने गुजारी तुझ से ही डरते हुये ॥

जिन्दगी भर वो परीशाँ हाल रहता है यहाँ ।
भूल जाता है तुझे दुनिया में जो रहते हुये ॥

हर नफ़स लेते रहे हैं नाम जो तेरा यहाँ ।
नफ़रतों की भीड़ से निकले हैं वो बचते हुये ॥

सुनते हैं तू जन्नत[2]-उल-फ़िरदौस देता है उन्हें ।
नाम ले लेते हैं तेरा लोग जो मरते हुये ॥

क्या तसव्वुर को तेरे पर लग गये "दिलबर" बता ।
ये पहुँच जाता है रब तक पल में जो उड़ते हुये ॥

1. दुखों का बोझ, 2. स्वर्ग

जो तेरी ज़ात से या रब जहाँ में लौ लगाते हैं।
वो आते हैं यहाँ रोते हुये और हँसते जाते हैं॥

ये देखा है करम[1] करता है उन पर तू सदा मौला।
जो हरदम जिन्दगी में दूसरों के काम आते हैं॥

यक़ीं जिनका मुकम्मल है तेरी शान-ए-करीमी[2] पर।
कमाते हैं करम से तेरे रोजी पाक खाते हैं॥

करम कर उनकी हालत पर जो इस दुनिया-ए-फ़ानी में।
हुये हैं बदगुमाँ, इक दूसरे पर ज़ुल्म ढाते हैं॥

तसद्दुक़[3] तुझ पे करते हैं जो अपनी जिन्दगी या रब।
वही तो कामयाबी की नई राहें बनाते हैं॥

जबींसाई[4] जो करते हैं तेरी चौखट पे ऐ मौला।
ज़माने को वही तो अपने क़दमों पर झुकाते हैं॥

मोहब्बत उनसे करता है सदा "दिलबर" ज़माने में।
जो इन्सानों में तेरे ज्ञान की गंगा बहाते हैं॥

1. कृपा, 2. खुदा की शान,
3. न्योछावर, 4. सर झुकाना

जो दिल के आइने में तेरा जलवा देख लेते हैं ।
हक़ीक़त में वही संसार सारा देख लेते हैं ॥

वो तेरी शान-ए-कुदरत के हुआ करते हैं शैदाई ।
तेरी सनअत[1] का जो या रब नमूना देख लेते हैं ॥

दिया करता है तू चश्म[2]-ए-बसीरत जिनको दुनिया में ।
वो तेरी शान-ए-कुदरत का करिश्मा देख लेते हैं ॥

तुझी से करते हैं फ़रियाद, वो जो अपनी आँखों से ।
र वाँ जग में तेरी रहमत का दरिया देख लेते हैं ॥

तेरे लुत्फ़-ओ-करम से जिनके भी दिल की खुली आँखें ।
वो घर बैठे ज़माने का तमाशा देख लेते हैं ॥

बयाँ करने से क़ासिर[3] हैं, तसव्वुर में तेरे जो भी ।
जरा नज़दीक होते हैं तो क्या-क्या देख लेते हैं ॥

रह-ए-इश्क़-ओ-वफ़ा पर चलते हैं बेख़ौफ़ वो "दिलबर" ।
तेरी चश्म-ए-करम का जो उजाला देख लेते हैं ॥

1. कारीगरी, 2. पहचानने वाली आँख,
3. मजबूर

जो तुझ से मोहब्बत करते है, जो दिल से इबादत करते हैं ।
वो नाम पे तेरे मरते हैं और नाम पे तेरे जीते हैं ॥

बेसाख़्ता[1] याद आती है तेरी दिल ग़म से बेकल होता है ।
जब देखता हूँ मैं जिस्मों से रूहों के परिन्दे उड़ते हैं ॥

वो शाद हमेशा रहते हैं चलते हैं वफ़ा की राहों पर ।
जीवन के सफ़र में ऐ मौला जो तेरे ग़ज़ब[2] से डरते हैं ॥

वो शीरीं[3] ज़ुबाँ से दुनिया को करते हैं हमेशा गर वीदा[4] ।
रोशन है उन्हीं से राह-ए-वफ़ा जो राह पे तेरी चलते हैं ॥

दुनिया की मोहब्बत में देखा रूठे हैं मुक़द्दर लोगों के ।
इक तेरी मोहब्बत में मौला लोगों के मुक़द्दर बनते हैं ॥

होती है मेरे जीवन में सहर हर सम्त उजाला होता है ।
जब तेरा तसव्वुर होता है अनवार[5] मुसलसल[6] ढलते हैं ॥

हर लम्हा झूमा करता है इक वज्द[7] के आलम[8] में "दिलबर" ।
जब उसके रियाज़[9]-ए-दिल में तेरी यादों के शिगूफ़े[10] खिलते हैं ॥

1.इकबारगी,	2. नाराजगी,	3. मीठी,	4. आशिक़,
5. प्रकाश की किरणें,	6, लगातार,	7. अत्यधिक खुशी,	
8. स्थिति (दशा),	9. दिल का चमन,	10. फूलों के गुच्छे	

सिर्फ़ तू है तेरा सहारा है ।
वरना दुनिया में क्या हमारा है ॥

बेकराँ[1] जीस्त के समन्दर में ।
तू ही जाने कहाँ किनारा है ॥

उसको आई तेरी मदद फ़ौरन ।
जिसने दिल से तुझे पुकारा है ॥

जिन्दगी तुझको सौंप कर या रब ।
सर से बार-ए-गराँ[2] उतारा है ॥

तू ही ख़ालिक़ है दोनों आलम का ।
तेरा ही ये निज़ाम[3] सारा है ॥

तेरी कुदरत का ऐ मेरे मौला ।
बज़्म-ए-आलम[4] में हर नज़ारा[5] है ॥

अब तो "दिलबर" पे हो करम या रब ।
शिद्दत-ए-गम[6] से पारा-पारा[7] है ॥

1. अथाह, 2. भारी बोझ, 3. इन्तजाम (व्यवस्था),
4. संसार, 5. दृश्य, 6. दुख की अधिकता,
7. टुकड़े-टुकड़े

तेरी यादों का या रब जब कि झोंका भी नहीं आता ।
तो दिल को चैन फिर मेरे जरा सा भी नहीं आता ॥

मैं ढूँढूँ किस तरह तुझको, सलीक़ा भी नहीं आता ।
नजर रहबर रह-ए-हक़ में तो ऐसा भी नहीं आता ॥

किसे अपना कहूँ, किस को पराया, मैं यहाँ मौला ।
जहाँ में वक़्त पर तो काम अपना भी नहीं आता ॥

तड़प तो है, तेरी चश्म-ए-इनायत हो मुझे हासिल ।
तलब कैसे करूँ, इसका क़रीना[1] भी नहीं आता ॥

भला कैसे करूँ तुझसे मैं या रब इल्तजा[2] कोई ।
नेदामत[3] से गुनह पर अपने रोना भी नहीं आता ॥

मैं जैसा भी हूँ, तेरा हूँ, मुझे है आसरा तेरा ।
मुझे तो ऐ खुदा गिर कर सँभलना भी नहीं आता ॥

करम हो जाये तो "दिलबर" की हस्ती भी सँवर जाये ।
उसे तुझको मनाने का तरीक़ा भी नहीं आता ॥

1.ढंग, 2. मिन्नत करना (खुशामद करना),
3. शर्मिन्दगी

बशर जब तुझ से बेगाना[1] हुआ है।
जमाने में बहुत रुसवा[2] हुआ है॥

दिखा दे अब तो जलवा ऐ इलाही।
तमन्ना करते इक अर्सा हुआ है॥

हयात[3]-ए-नौ की हसरत जाग उट्ठी।
जो तुझ पे दिल मेरा शैदा हुआ है॥

तेरी चश्म-ए-इनायत से मुनव्वर[4]।
मेरी हस्ती का हर गोशा हुआ है॥

करम हो ऐ खुदा, इन्साँ जहाँ में।
रह[5]-ए-हक़ से बहुत भटका हुआ है॥

नहीं मिलती है उससे भी मसर्रत[6]।
बड़ा बेकैफ़ हर जलवा हुआ है॥

तुझे सब कुछ ख़बर है, क्या बताऊँ।
कि "दिलबर" तेरा दीवाना हुआ है॥

1. अन्जान, 2. बेइज़्ज़त, 3. नवीन जिन्दगी,
4. चमकदार, 5. सच्चाई की राह, 6. खुशी

ग़मों की भीड़ में लाज़िम[1] है आदमी के लिये ।
तेरा ख़्याल जरूरी है जिन्दगी के लिये ॥

कभी जो दर्द के बिस्तर पे आई याद तेरी ।
यही बहुत था मेरी ज़ौफ़-ए-बेखुदी[2] के लिये ॥

वो बदनसीब है तुझ से रहे जो बेगाना ।
तेरा करम तो है दुनिया में हर किसी के लिये ॥

हयात अपनी तेरी याद से करे रोशन ।
ये रोशनी भी जरूरी है आदमी के लिये ॥

फ़ज़ा-ए-आलम-ए-इमकाँ पे छा गई है वही ।
हयात वक़्फ़[3] रही जो कि बन्दगी के लिये ॥

तमाम उम्र रहे होके जो तेरे मौला ।
जहाँ में आये थे लारैब[4] वो इसी के लिये ॥

करम की एक नजर कर दे अपने "दिलबर" पे ।
तरस रहा है वो इरफ़ान[5]-ओ-आगही के लिये ॥

1.वाजिब, 2. बेसुध हो जाना, 3. समर्पित,
4. वास्तव में, 5. पहचान

मुसाफ़िर हैं खुदा तेरी डगर के ।
हुये हैं मुस्तहक़ तेरी नजर के ॥

सरापा[1] जिन्दगी बदली हुई है ।
ये देखा मैंने तुझ से प्यार कर के ॥

तेरा दस्त-ए-करम है मेरे सर पर ।
रहूँ मैं किसलिये दुनिया से डर के ॥

इबादत दिल से की तेरी जिन्होंने ।
वही तो पासबाँ[2] थे तेरे दर के ॥

तेरी यादों से दिल को जगमगाऊँ ।
तक़ाजे[3] हैं यही जाद[4]-ए-सफ़र के ॥

दिलाते हैं यक़ीनन याद तेरी ।
नजारे दिलनशीं शाम-ओ-सहर के ॥

तेरी उल्फ़त में दीवाना है "दिलबर" ।
लगाता है वो चक्कर तेरे घर के ॥

1. सर से पाँव तक (सम्पूर्ण), 2. पहरेदार,
3. ख़्वाहिशें, 4. यात्रा का ख़र्च

तुझ को जो क़स्र[1]-ए-दिल में ख़ुदाया बसा लिया।
लारैब मैंने मक़सद[2]-ए-तख़लीक़ पा लिया॥

तेरा करम रहा है तो इस कायनात[3] में।
हर एक ग़म ज़माने का हँस कर उठा लिया॥

आई हुई बलायें मेरे सर से टल गई।
जिस वक़्त दिल से नाम तेरा ऐ ख़ुदा लिया॥

आया तेरा ख़याल, तेरी याद आई जब।
फ़र्त[4]-ए-अदब से सर वहीं मैंने झुका लिया॥

तेरी ख़ुशी के वास्ते राह-ए-हयात में।
बेकस[5] मिला कोई तो गले से लगा लिया॥

होता ग़मों का फिर मुझे एहसास किस तरह।
जब तेरे ही ख़याल से ख़ुद को सजा लिया॥

"दिलबर" भुला सका, न भुला पायेगा कभी।
वो लम्हा, तूने पास जब इसको बुला लिया॥

1.दिल का महल, 2. जीवन का उद्देश्य, 3. दुनिया,
4. बड़े अदब, 5. लाचार

तू रग[1]-ए-जाँ के क़रीं[2] था देख पाया ही नहीं ।
ये ख़ता अपनी है दिल तुझ से लगाया ही नहीं ॥

क्या समझ पायेगा सोज़[3]-ए-दिल की लज़्ज़त[4] इश्क़ में ।
ग़म तेरा या रब कभी जिसने उठाया ही नहीं ॥

जो अता तूने किया था, उस पे मैं था मुतमइन ।
ख़्वाहिशों की आग में ख़ुद को जलाया ही नहीं ॥

ज़ात पर तेरी रहा अपना यक़ीं मोहकम[5] सदा ।
सर किसी चौखट पे दुनिया में झुकाया ही नहीं ॥

पास तेरे ले के इस दुनिया से क्या मैं आऊँगा ।
एक ईमाँ के सिवा कुछ भी बचाया ही नहीं ॥

जलवागर जिन के भी दिल में तू रहा हरदम ख़ुदा ।
फिर उन्होनें दिल में दुनिया को बसाया ही नहीं ॥

ऐ ख़ुदा "दिलबर" पे है तेरा ख़ुसूसी[6] ये करम ।
कोई भी तेरे सिवा याद उसको आया ही नहीं ॥

1-2. अत्यन्त नजदीक, 3. दिल की जलन,
4. मजा (जायक़ा), 5. मजबूत (पक्का),
6. विशेष

इन्साँ बा किरदार[1] हुआ है ।
जिस दम तुझसे प्यार हुआ है ॥

इश्क़ में तेरे इस जीवन का ।
हर गोशा ज़ौबार[2] हुआ है ॥

तेरा हुआ वो, जिसको तेरे ।
जलवों का दीदार[3] हुआ है ॥

चश्म-ए-करम हो, चैन से जीना ।
दुनिया में दुश्वार हुआ है ॥

जो भी रहा है तेरे सहारे ।
उसका बेड़ा पार हुआ है ॥

तुझ से हुआ मन्सूब[4] जो जीवन ।
एक हसीं गुलज़ार[5] हुआ है ॥

तेरे सिवा "दिलबर" का या रब ।
कौन भला ग़मख़्वार हुआ है ॥

1. चरित्रवान, 2. चमकदार, 3. दर्शन,
4. सम्बन्धित, 5. फूलों का बगीचा (फुलवारी)

मिल गया जिसको आसरा तेरा ।
बिलयक़ीं दिल से वो हुआ तेरा ॥

ख़ास बन्दा है जो ख़ुदा तेरा ।
करता रहता है तज़किरा[1] तेरा ॥

दोनों आलम[2] में कामयाब हुआ ।
जिसने अपनाया रास्ता तेरा ॥

मेहरबाँ उस पे हो गई दुनिया ।
हो के दुनिया में जो रहा तेरा ॥

वो अमीं[3] बन गया वफ़ाओं का ।
सिद्क़[4] दिल से जो हो गया तेरा ॥

तेरी ही कायनात[5] है मौला ।
हर किसी से है राब्ता[6] तेरा ॥

पास "दिलबर" के आ सकी न बला[7] ।
नाम जपता रहा सदा तेरा ॥

1. बयान (चर्चा), 2. मृत्य एवं स्वर्ग लोक,
3. धारण करने वाला, 4. सच्चे, 5. सृष्टि,
6. सम्बन्ध, 7. मुसीबत (चुड़ैल-भूत-प्रेत आदि)

दिल-ओ-जाँ में रहता है तू ही ।
ख़यालों में सदा आता है तू ही ॥

हैं मुश्किल काम जो भी जिन्दगी के ।
वो सब आसाँ किया करता है तू ही ॥

मेरे अफ़्कार[1] में रहता है जब तू ।
मेरे अशआर में ढलता है तू ही ॥

ये बे पायाँ[2] करम मुझ पर है तेरा ।
दिल[3]-ए-ख़ुफ़्ता जगा देता है तू ही ॥

तुझे जब याद करता हूँ मैं दिल से ।
क़रीं दिल के मेरे लगता है तू ही ॥

जमाना जख़्म देता है मुसलसल ।
हमारे काम बस आता है तू ही ॥

कभी महसूस ये करता है "दिलबर" ।
कि उसके साथ में हँसता है तू ही ॥

1.विचारों (सोच), 2. असीम, 3. सोया हुआ दिल

तूने मेरी हयात के दामन को भर दिया ।
देखा था जो भी ख़्वाब वो साकार कर दिया ॥

माँजी[1] की याद मुझको दिलाते हैं जो सदा ।
नजरों को मेरी तूने वही बाम-ओ-दर दिया ॥

जिससे रहा हूँ राह-ए-वफ़ा पर मैं गामजन ।
तूने मुझे शोऊर[2] वो, जर्फ़-ए-नजर दिया ॥

जिसके तुफ़ैल[3] हो गई आसान जिन्दगी ।
साया है जिनका सब पे वो बर्ग-ओ-शजर दिया ॥

इक दूसरे के मोनिस[4]-ओ-हमदर्द हैं जहाँ ।
तेरा बड़ा करम है मुझे वो नगर दिया ॥

जिनकी फ़ज़ा में दिल को मिला करता है सुकूँ ।
बन्दों को अपने तूने वो शाम-ओ-सहर दिया ॥

मुश्किल न पेश आयेगी उसको हयात में ।
"दिलबर" को अपने तूने वो जाद-ए-सफ़र दिया ॥

1. भूतकाल, 2. अक्ल,
3. बदौलत (वजह से), 4. दोस्त-यार

हुस्न[1]-ए-अल्ताफ़ पर मुस्कराता रहा ।
तेरी यादों से दिल जगमगाता रहा ॥

तुझ से डरता रहा, तो जमाने का डर ।
जिन्दगानी से फिर मेरी जाता रहा ॥

कैफ़-ओ-मस्ती भी बढ़ती रही हर क़दम ।
तेरी जानिब[2] क़दम जब बढ़ाता रहा ॥

वो जमाने को ख़ातिर[3] में लाता ही क्यों ।
ऐ खुदा लौ जो तुझ से लगाता रहा ॥

जिक्र-ए-दुनिया से होती उसे क्या गरज ।
जो सुकूँ तेरी यादों में पाता रहा ॥

राह-ए-हक़ पर जो चलता रहा उम्र भर ।
अपनी रहमत तू उस पर लुटाता रहा ॥

क्यों हो "दिलबर" को या रब गम-ए-मासिवा[4] ।
तू ही तू जब उसे याद आता रहा ॥

1.मेहरबानी का तरीका, 2. तरफ़,
3. परवाह करना, 4. दुनिया का दुख

तेरे नाम की खुशबू से दिल का दामन भर लेता हूँ ।
जिस वक़्त परीशाँ होता हूँ मैं याद तुझे कर लेता हूँ ॥

डूब के तेरी उल्फ़त के बे पायाँ समन्दर में या रब ।
जीते जी मैं इस दुनिया में भवसागर तर लेता हूँ ॥

हो जाती है ख़ामोश जबाँ तन है कि लरजने[1] लगता है ।
सुध-बुध खो जाती है मेरी जब ध्यान तेरा धर लेता हूँ ॥

जीवन के गम और खुशी का मुझ को कुछ एहसास नहीं ।
या रब तेरा नाम जो सुब्ह-ओ-शाम बराबर लेता हूँ ॥

ऐश[2]-ओ-तरब की चाहत में दौलत की तमन्ना मुझको नहीं ।
जीवन की जरूरत भर के लिये इस दुनिया से जर[3] लेता हूँ ॥

बेख़बरी होती है मुझ पर, सब लोग बताते हैं ऐसा ।
ख़्वाब में भी मैं नाम खुदाया तेरा अक्सर लेता हूँ ॥

सारे नाम उसी के तो हैं ईश्वर या अल्लाह कहें ।
रूप उसी का तो है "दिलबर" नाम जो अक्सर लेता हूँ ॥

1. काँपना, 2. मौज-मस्ती,
3. धन (माल-ओ-दौलत)

मेरे दिल में तेरा आना-जाना रहे ।
ग़म नहीं लाख दुश्मन ज़माना रहे ॥

अब्दियत है यही ख़ान-ए-दिल मेरा ।
याद का तेरी मौला ठिकाना रहे ॥

मेरे दिल की तमन्ना है पेश-ए-नज़र ।
तेरे महबूब स० का आस्ताना रहे ॥

ये तमन्ना है या रब लबों पर मेरे ।
बस तेरी हम्द[1], तेरा तराना रहे ॥

मुझ को मालूम है, तुझ को मरगूब[2] है ।
ज़िन्दगानी मेरी सूफ़ियाना रहे ॥

वो करम हो सदा ख़ान-ए-दिल मेरा ।
इल्म[3]-ओ-हिक्मत का या रब ख़ज़ाना रहे ॥

लुत्फ़ बर हाल-ए-"दिलबर" पे हो ऐ ख़ुदा ।
चश्म-ए-रहमत सदा गायबाना[4] रहे ॥

1.तारीफ़ (बड़ाई), 2. पसन्द,
3. ज्ञान और समझदारी, 4. अप्रत्यक्ष रूप से

सब से अफ़ज़ल है सिर्फ ज़ात तेरी ।
तू है ख़ालिक़[1], ये कायनात तेरी ॥

बस वही कामयाब है इन्साँ ।
मानता है जो दिल से बात तेरी ॥

जगमगाता है बज़्म-ए-आलम को ।
जिस ने देखीं तजल्लियात[2] तेरी ॥

मुझ को दोनों अज़ीज़[3] हैं या रब ।
वो तेरा दिन हो या कि रात तेरी ॥

जावेदाँ[4] ज़िन्दगी मिली जिस से ।
है फ़क़त चश्म[5]-ए-इल्तेफ़ात तेरी ॥

देखाता हूँ कि नूर[6] से तेरे ।
जगमगाती है कायनात तेरी ॥

क़ल्ब-ए-"दिलबर" को है यक़ीं या रब ।
वहदहू[7] ला शरीक . ज़ात तेरी ॥

1. पैदा करने वाला, 2. झलकियाँ (प्रकाश की चमक),
3. प्रिय, 4. स्थाई, 5. कृपादृष्टि,
6. प्रकाश, 7. अकेला (जिसमें कोई शरीक न हो)

उम्र जो तेरी इबादत में बिता देता है ।
मर्तबा उसका तू दुनिया में बढ़ा देता है ॥

ख़ुद से बेगाना जो होते हैं तेरी उल्फ़त में ।
उनकी नजरों से हिजाबात[1] उठा देता है ॥

सर किसी ग़ैर के दर पे वो झुकाता ही नहीं ।
तेरी चौखट पे जबीं जो भी झुका देता है ॥

बाँटता है वो जमाने में मोहब्बत, जिस के ।
दिल में उल्फ़त की तू इक शम्मा जला देता है ॥

उस पे रहता है तू मायल[2] ब करम ऐ मौला ।
कर के एहसान किसी पर जो भुला देता है ॥

देखता हूँ कि क़रीने से तू हर शाम ढले ।
आसमाँ चाँद-सितारों से सजा देता है ॥

अपने "दिलबर" पे भी करता है करम तू अक्सर ।
अपना जलवा जो तसव्वुर[3] में दिखा देता है ॥

1. पर्दे, 2. कृपावान, 3. ख़्वाब

भटक रहा है जो दुनिया में माल-ओ-ज़र के लिये ।
तेरा ख़याल ज़रूरी है उस बशर के लिये ॥

तेरे करम की तो ख़्वाहिश बशर को है लेकिन ।
तेरी रज़ा भी है लाज़िम तेरी नज़र के लिये ॥

मेरी हयात-ए-परीशाँ को भी सँवारेगा ।
कि इन्तज़ाम तू करता है खुश्क-ओ-तर के लिये ॥

कहीं गुलों की है खुश्बू, कहीं तराने तेरे ।
अजब है नज़्म तेरा शाम और सहर के लिये ॥

सँवारता है जो इन्साँ की आक़बत या रब ।
वही शोऊर अता कर मुझे सफ़र के लिये ॥

ख़ुलूस[1]-ओ-प्यार का पैकर[2] बने हर इक इन्साँ ।
ये इन्तज़ाम भी कर दे मेरे नगर के लिये ॥

वो हौसला, वो अज़ाएम[3] अता हों "दिलबर" को ।
क़दम बढ़ाये हमेशा तेरी डगर के लिये ॥

1. सच्ची दोस्ती, 2. ढाँचा, 3. इरादे

हर्फ़[1] तेरे, लफ़्ज[2] तेरे, हम्द लिखता हूँ तेरी ।
या इलाहुलआलमीं[3] मैं बात कहता हूँ तेरी ॥

ये जमीनें हैं तेरी, सब आसमाँ भी हैं तेरे ।
इन से भी हर वक़्त मौला हम्द सुनता हूँ तेरी ॥

तुझ से ही गर्दिश[4] में या रब है जमाने का निजाम ।
गर्दिश-ए-दौराँ के रुख़[5] पर हम्द लिखता हूँ तेरी ॥

गुल खिलाये कितने ही तूने जहाँ में हर नफ़स ।
मुन्तजिर[6] रहमत[7] का मैं हर वक़्त रहता हूँ तेरी ॥

तेरी मर्जी से है गर्दिश में निजाम-ए-दो जहाँ ।
नज़्म[8]-ए-आलम से भी मैं आवाज सुनता हूँ तेरी ॥

जात-ए-इन्साँ को बना कर इल्म की सौगात[9] दी ।
जात-ए-इन्साँ से सदा सौगात पाता हूँ तेरी ॥

हम्द लिखने का सलीक़ा तो नहीं "दिलबर" में कुछ ।
जो भी लिखता हूँ फ़क़त वो बात लिखता हूँ तेरी ॥

1. अक्षर, 2. शब्द, 3. सभी संसारों का पूज्य (ईश्वर), 4. चक्कर (घूमना), 5. गाल (चेहरा), 6. इन्तजार करने वाला, 7. कृपा, 8. संसार की व्यवस्था, 9. तोहफ़ा

इक तेरे इश्क़ के साँचे में जो ढल जाता है ।
उसके जीने का फिर अन्दाज़ बदल जाता है ॥

जो तेरे क़ुर्ब[1] में रहता है, अगर उसके क़रीं[2] ।
ग़म का तूफ़ान भी आता है, तो टल जाता है ॥

जिस पे रहता है तेरा दस्त-ए-करम ऐ मौला ।
हर मुसीबत से वही बच के निकल जाता है ॥

अहल-ए-आलम से र वाबत[3] वो करे क्यों क़ायम[4] ।
जिस का हर काम तेरे फ़ैज़ से चल जाता है ॥

तेरे अन्दाज़-ए-करम ने ये बताया मौला ।
ग़म का जीवन से हर इक ख़ार[5] निकल जाता है ॥

वो भला तेरी मोहब्बत का मज़ा क्या जाने ।
हुस्न-ओ-दौलत पे जो दुनिया में फिसल जाता है ॥

ख़ास ये लुत्फ़-ओ-करम है तेरा "दिलबर" पे ख़ुदा ।
राह-ए-हस्ती में वो गिर कर भी सँभल जाता है ॥

1-2. क़रीब (समीप), 3. सम्बन्ध,
4. स्थापित, 5. काँटा

अब न छेडूँगा संसार का तज़किरा ।
लब पे मौला के है प्यार का तजकिरा ॥

हम्द होती है जिस वक़्त लब पर मेरे ।
हेच[1] होता है घर-बार का तज़किरा ॥

दिल भी रोशन करेगा यक़ी है मुझे ।
लब पे है तेरे अनवार[2] का तज़किरा ॥

तेरे लुत्फ़-ओ-करम से अब आसान है ।
क्यों करूँ राह-ए-दुश्वार का तजकिरा ॥

तू जो चाहे तो दुनिया में होने लगे ।
ऐ ख़ुदा मेरे किरदार[3] का तज़किरा ॥

बज़्म-ए-आलम में जुर्रत[4] किसी में नहीं ।
जो करे तेरे इसरार[5] का तज़किरा ॥

तेरी चश्म-ए-इनायत से होने लगा ।
क़ल्ब-ए-"दिलबर" के अफ़्कार[6] का तजकिरा ॥

1. कम, 2. उजालों, 3. चाल-चलंन,
4. हौसला, 5. छुपी हुई बातें (राज),
6. विचारों

तेरे ही नूर से जीवन की रोशनी पाई ।
उठी जो चश्म-ए-इनायत तो जिन्दगी पाई ॥

नसीब[1]-ए-खुफ्ता को बेदार कर दिया जिस ने ।
मेरी हयात ने वो ख़ू[2]-ए-आशिक़ी पाई ॥

तेरा करम जो हुआ है तो तेरे बन्दों ने ।
जहाँ में दौलत-ए-इरफ़ान-ओ-आगही पाई ॥

तेरे ही नूर से रोशन हुये हैं दिन मौला ।
तेरे ही फ़ैज से रातों ने दिलकशी पाई ॥

बजा है नाज वो करता है अपनी क़िस्मत पर ।
जहाँ में जिसने मता[3]-ए-खुद आगही पाई ॥

तेरे करम से महकता है गुलशन[4]-ए-आलम ।
गुलों ने रंग, हवाओं ने ताजगी पाई ॥

मिली है चश्म-ए-बसीरत तुझी से "दिलबर" को ।
तुझी से उसने अजाएम[5] की पुख़्तगी[6] पाई ॥

1. सोया हुआ भाग्य, 2. मोहब्बत करने की आदत,
3. स्वयं के पहचानने की दौलत, 4. दुनिया का चमन,
5. हौसलों, 6. मजबूती

जब तेरी याद में लुत्फ़ आने लगा ।
तो ख़याल-ए-जहाँ दिल से जाने लगा ॥

हो गया तेरी वहदत[1] पे पूरा यक़ीं ।
हम्द जब से तेरी गुनगुनाने लगा ॥

साथ दिल के जबीं जगमगाने लगी ।
सर जो दर पे तेरे मैं झुकाने लगा ॥

तेरी चश्म-ए-इनायत जो मुझ पर हुई ।
अपना बिगड़ा मुक़द्दर बनाने लगा ॥

ख़्वाहिशें दिल से दुनिया की मिटने लगीं ।
जब मजा तेरी रहमत का पाने लगा ॥

इश्क़ करने लगे मुझ पे अरबाब[2]-ए-फ़न ।
हम्द जब तेरी उनको सुनाने लगा ॥

बादा[3]-ए-इश्क़ से तेरी "दिलबर" खुदा ।
प्यास अपने लबों की बुझाने लगा ॥

1. एक होना, 2. हुनरमन्द, 3. मोहब्बत की शराब

तेरी रहमत[1] से मिटीं सब जीस्त[2] की दुश्वारियाँ ।
क्या बिगाड़ेंगी मेरा अब गर्दिशों की आँधियाँ ॥

नाम तेरा ले के निकला था वफ़ा की राह में ।
मुश्किलें मिटती गई, होती गई आसानियाँ ॥

आलम[3]-ए-कैफ़-ओ-तरब- में झूमने लगता हूँ मैं ।
वज्द के आलम में लाती हैं मेरी तनहाइयाँ[4] ॥

सोचता हूँ तूने डाली है दरख़्तों पर नजर ।
देखता हूँ जब इन्हें लेते हुये अँगड़ाइयाँ ॥

तेरी राहों में निकलता हूँ कभी जब ऐ ख़ुदा ।
फूल बन जाती हैं मुझ पर धूप की चिनगारियाँ ॥

जिस मकाँ पर नाम लिक्खा है तेरा परवरदिगार ।
आसमाँ उस पर गिरा सकता नहीं फिर बिजलियाँ ॥

तेरे "दिलबर" को नज़र आता है फ़िरदौस[5]-ए-बरीं ।
तेरी यादें जब सुलाती हैं सुना कर लोरियाँ ॥

1. कृपा, 2. जिन्दगी, 3. मस्ती और ख़ुशी की हालत,
4. अकेलापन, 5. स्वर्ग

हक़ परस्तों का या रब तरफ़दार हूँ।
तेरी रहमत का हर दम तलबगार हूँ॥

लौ लगाई है मैंने तेरी ज़ात से ।
ये ख़ता है तो फिर मैं ख़ताकार हूँ॥

तेरी चश्म-ए-करम ने दिया हौसला।
बस उसी के सहारे मैं दमदार हूँ॥

चाहता हूँ तेरा आसरा ऐ खुदा ।
अस्र[1]-ए-हाजिर से बेहद मैं बेज़ार[2] हूँ॥

जिक्र तेरा, तेरी फिक्र रहती तो है ।
बेनवां[3] ही सही इक क़लमकार हूँ॥

मुझको दुनिया से कोई नहीं वास्ता।
तेरा तालिब[4] हूँ, तेरा परिस्तार[5] हूँ॥

होके तेरा समझता है "दिलबर" यही।
तेरी चश्म-ए-इनायत का हक़दार हूँ॥

1. वर्तमान, 2. नाराज, 3. लाचार,
4. उम्मीदवार, 5. पुजारी

ऐ ख़ुदा जिसने क़दम तेरी डगर में रक्खा ।
हर घड़ी तूने उसे अपनी नज़र में रक्खा ॥

एक तेरा ही सहारा है जो बदला न कभी ।
इस जहाँ ने तो सदा ज़ेर[1]-ओ-जबर में रक्खा ॥

बज़्म-ए-आलम से अँधेरों को मिटाने के लिये ।
तूने इक नूर का सरमाया[2] क़मर[3] में रक्खा ॥

तेरी राहों से वो भटका है, न भटकेगा कभी ।
जिसने हर लम्हा तुझे याद सफ़र में रक्खा ॥

उसकी हस्ती की बलन्दी को कोई छू न सका ।
जिसने अनवार तेरे क़ल्ब[4]-ओ-जिगर में रक्खा ॥

तूने अल्ताफ़[5] के बरसाये वहाँ पर बादल ।
तेरे बन्दों ने क़दम जिस भी नगर में रक्खा ॥

दे के "दिलबर" को ख़ुदा इल्म की दौलत तू ने ।
नाम को उसके भी अरबाब[6]-ए-हुनर में रक्खा ॥

1. ऊपर और नीचे, 2. दौलत (पूँजी), 3. चाँद,
4. दिल और कलेजा, 5. मेहरबानियाँ, 6. हुनर वाले

तेरी याद ऐसा असर कर गई है ।
कि खुद से मुझे बेख़बर कर गई है ॥

मेरी जिन्दगी में कभी कम ने होगी ।
मोहब्बत तेरी दिल में घर कर गई है ॥

तेरी एक चश्म-ए-इनायत ही मौला ।
अता सोज़[1]-ए-क़ल्ब-ओ-जिगर कर गई है ॥

मता-ए-मोहब्बत जो बख़्शी[2] है तूने ।
वो कम क़ीमत-ए-माल-ओ-जर कर गई है ॥

पड़ी जो तेरी एक चश्म-ए-इनायत ।
शब-ए-जिन्दगी की सहर कर गई है ॥

तेरी चश्म-ए-रहमत हुई जिस पे मौला ।
उसे इस जहाँ में अमर कर गई है ॥

जो "दिलबर" को बख़्शी है खू[3]-ए-नेदामत ।
वही उसको बा चश्म-ए-तर कर गई है ॥

1. दर्द (जलन), 2. प्रदान की,
3. शर्मिन्दगी की आदत

जमीं ता फलक चादँ तारों में मौला ।
तेरा नूर है सब फ़ज़ाओं में मौला ॥

सुनी बारहा[1] तेरी आवाज़ मैंने ।
सुबुक[2] गाम नाज़ुक हवाओं में मौला ॥

जो समझा है दिल ने, जो आँखों ने देखा।
करिश्मा तेरा गुल में, ख़ारों में मौला ॥

तेरे फ़ैज ही से सुकूँ[3] मिल रहा है ।
जहाँ को दरख़्तों की छावों में मौला ॥

ये तेरा करम, ये इनायत है तेरी ।
जो तासीर आई दुआवों में मौला ॥

तसव्वुर में सुनता हूँ आवाज तेरी ।
दिल[4]-ए-मुजतरिब की सदाओं में मौला ॥

समझता है, तेरे ही अनवार "दिलबर" ।
जहाँ के तमामी नजारों में मौला ॥

1. कई बार, 2. तेज रफ़्तार, 3. आराम,
4. बेचैन (बेक़रार) दिल

अपनी जानें निसार[1] करते हैं ।
तुझ से या रब जो प्यार करते हैं ॥

बज़्म-ए-आलम में सिर्फ़ तुझ पर ही ।
अहले[2]-ए-दिल ऐतबार[3] करते हैं ॥

काम बनते हैं उनके, तेरे लिये ।
खुद को जो बेक़रार करते हैं ॥

नाम लेकर तेरा ही दुनिया में ।
अपना हम कार-ओ-बार करते हैं ॥

तेरी यादों से गुलशन-ए-हस्ती ।
हम सदा पुर[4] बहार करते हैं ॥

अक़्ल वाले हैं वो, तेरी ख़ातिर ।
राह-ए-गम अख़्तियार करते हैं ॥

हो गया जब तेरा, तो "दिलबर" को ।
सब जमाने में प्यार करते हैं ॥

1. न्योछावर, 2. सभी लोग,
3. विश्वास, 4. रौनक़ से भरपूर

तेरे दीद[1] की इल्तजा[2] करते - करते ।
बहुत वक़्त गुजरा दुआ करते - करते ॥

अजल[3] से जहाँ भर को देता रहा है ।
थका तू न हरगिज अता करते - करते ॥

बशर राह-ए-हक़ से हुआ दूर कितना ।
फ़रामोश[4] तुझ को खुदा करते - करते ॥

शेफ़ा[5] पा गया तेरी चश्म-ए-करम से ।
न अच्छा हुआ जो दवा करते - करते ॥

पहुँच ही गया मन्जिल-ए-जिन्दगी तक ।
तुझे जीस्त का रहनुमा[6] करते - करते ॥

तेरी रहमतों का सहारा मिला है ।
गरीबों से या रब वफ़ा करते - करते ॥

तमन्ना ये है जान "दिलबर" की जाये ।
तेरे दर पे सजदा अदा करते - करते ॥

1. दर्शन, 2. खुशामद, 3. सृष्टि की शुरुआत का दिन,
4. भुला देना, 5. तन्दुरस्ती, 6. रास्ता दिखाने वाला

या रब जो वफ़ाओं का परिस्तार रहा है ।
एहकाम[1] का वो तेरे वफ़ादार रहा है ॥

मायल[2] ब करम उस पे रहा है तू हमेशा ।
जो तेरी अदाओं का परिस्तार रहा है ॥

बे दाग़ रहा दामन-ए-हस्ती भी उसी का ।
वो तेरे गजब से जो ख़बरदार रहा है ॥

जो तेरे ही एहकाम पे चलता रहा या रब ।
दुनिया में वही साहिब[3]-ए-किरदार रहा है ॥

जिस दिन से मिली तेरी मोहब्बत की तजल्ली ।
हर गोशा मेरी जीस्त का जौबार[4] रहा है ॥

ये तेरा करम है कि जमाल[5] उसको दिखाया ।
दीदार का जो तेरे तलबगार रहा है ॥

"दिलबर" पे हुई चश्म-ए-इनायत तेरी मौला ।
इक उम्र से जिसका वो तलबगार रहा है ॥

1. आदेशों, 2. कृपा करने वाला, 3. चरित्रवान,
4. प्रकाशित, 5. खूबसूरती

इबादत का हक़ हैं अदा करने वाले ।
तेरी ज़ात से रब्ता[1] करने वाले ॥

हिफ़ाजत मेरी तू ही करता है हरदम ।
मुझे जिन्दगानी अता करने वाले ॥

तेरा नाम ले कर जिये जा रहे हैं ।
तेरी ज़ात पर आसरा करने वाले ॥

रहा करते हैं तेरे साये में हरदम ।
जमाने के हक़ में दुआ करने वाले ॥

ये तेरा करम है, ये तेरी अता है ।
मेरे मर्तबे को सिवा[2] करने वाले ॥

परीशान होते नहीं जिन्दगी में ।
जो हैं जान तुझ पर फ़िदा करने वाले ॥

तेरे नेक बन्दे समझता है "दिलबर" ।
ग़रीबों का जो हैं भला करने वाले ॥

1. सम्पर्क, (लगाव) 2. बढ़ाना

तेरे अनवार इन में जो बसने लगे ।
मेरी आँखों के प्याले छलकने लगे ॥

तेरे अल्ताफ़ की नकहतें[1] क्या मिलीं ।
रात-दिन जिन्दगी के महकने लगे ॥

तेरी उल्फ़त की जब मिल गई रोशनी ।
ग़म के जितने दिये थे वो बुझने लगे ॥

अपनी मंजिल नजर आ रही है हमें ।
तेरी राहों पे जिस दिन से चलने लगे ॥

जिन्दगी में रहीं कुछ न दुश्वारियाँ ।
तेरी रहमत से सब काम बनने लगे ॥

ये भी तेरा करम है कि हम जीस्त में ।
बेनयाज़[2]-ए-ग़म[3]-ए-मर्ग रहने लगे ॥

जब से "दिलबर" पे तू मेहरबाँ हो गया ।
अहल-ए-दिल उसको अपना समझने लगे ॥

1. खुशबुयें, 2. बेपरवाह, 3. मौत का दुख

जो तेरे करम की नजर हो रही है ।
शब-ए-गम की मेरे सहर हो रही है ॥

निगाह-ए-करम हो, जमाने की उल्फ़त ।
मेरे हक़ में जख़्म-ए-जिगर हो रही है ॥

यक़ीनन तेरे फ़ैज़ से जिन्दगी की ।
जमाने में आसाँ डगर हो रही है ॥

इशारा है शायद तेरा, तेरी दुनिया ।
ब हर सम्त[1] जेर-ओ-जबर हो रही है ॥

वो है बदसनीब आदमी, जिसकी हस्ती ।
तेरी जात से बेख़बर हो रही है ॥

मेरी फिक्र चश्म-ए-इनायत से तेरी ।
जमाने में अब कारगर हो रही है ॥

तेरा हो के या रब समझता है "दिलबर" ।
कि अब जिन्दगी मोतबर हो रही है ॥

1. सभी जगहों पर

रवाँ है दिल में मेरे मौज[1] तेरी उल्फ़त की ।
रही न अब कोई ख़्वाहिश भी जाह[2]-ओ-हशमत की ॥

चमक रही है उसी की हयात दुनिया में ।
मिली है रोशनी जिसको तेरी इबादत की ॥

मदद तू करता है बन्दों की बेगरज़[3] मौला ।
कहाँ मिसाल है दुनिया में तेरी रहमत की ॥

नजर जिधर भी उठी तेरी शान-ए-कुदरत है ।
करेगा क्या कोई तारीफ़[4] तेरी कुदरत[5] की ॥

जमाना उसके मुक़द्दर पे नाज करता है ।
वो जिसके दिल में तजल्ली है तेरी कुरबत की ॥

हुई है चश्म-ए-करम जिन पे तेरी ऐ मौला ।
हयात उनकी हुई पासबाँ[6] हक़ीक़त की ॥

करम से अपने नवाजा है तूने "दिलबर" को ।
जहाँ में उसको तमन्ना नहीं है शोहरत की ॥

1. लहर (उमंग), 2. शान-ओ-शौकत,
3. बगैर स्वार्थ, 4. बड़ाई, 5. प्रकृति,
6. धारण करने वाली

तेरी चाहत की जब रोशनी मिल गई ।
मुझको या रब नई जिन्दगी मिल गई ॥

एक मुद्दत से जिसकी तलब थी मुझे ।
तेरी रहमत हुई वो ख़ुशी मिल गई ॥

कैफ़-ओ-मस्ती का आलम है, दिल में मेरे ।
बाद-ए-इश्क़ की चाशनी मिल गई ॥

मुझको उल्फ़त तेरी क्या मिली ऐ ख़ुदा ।
मुझको दौलत ही दारैन[1] की मिल गई ॥

जिन्दगी में मुझे और क्या चाहिए ।
तू मिला, दौलत-ए-बन्दगी मिल गई ॥

तेरे लुत्फ़-ओ-करम का ये एहसान है ।
मेरी हस्ती को जो बरतरी मिल गई ॥

जौफ़िशाँ[2] हो गये उसके क़ल्ब-ओ-जिगर ।
तुझसे "दिलबर" को जब रोशनी मिल गई ॥

1. दुनिया और आख़िरत, 2. प्रकाशित

तुझी से इल्म, तुझी से कोई हुनर माँगूँ ।
तुझी से अपनी दुआवों में मैं असर माँगूँ ॥

न हुक्मरानी, न दुनिया का माल-ओ-जर माँगूँ ।
तेरे करम की खुदाया बस इक नजर माँगूँ ॥

जो तेरे इश्क़ से गूँजा करे सदा या रब ।
वही दयार जहाँ में वही मैं घर माँगूँ ॥

तेरे ही इश्क़ से मामूर जो रहे हरदम ।
मैं चाहता हूँ वही दिल, वही जिगर माँगूँ ॥

जहाँ फ़ज़ाओं में हो गूँजती सदा[1] तेरी ।
वही मकान वही उसके बाम-ओ-दर माँगूँ ॥

वो जिस पे चलके मिले मक़सद[2]-ए-हयात मुझे ।
तेरे करम की मैं या रब वो रहगुजर माँगूँ ॥

तेरे करम से यही इल्तजा है "दिलबर" की ।
तेरे सिवा न किसी से कुछ उम्र भर माँगूँ ॥

1. आवाज, 2. जिन्दगी का उद्देश्य

एहकाम पे तेरे जो अपने जीवन को गुज़ारा करते हैं ।
दुनिया भी सँवारा करते हैं, उक़्बा भी सँवारा करते हैं ॥

मायल ब करम रहता है सदा उन पे तू यक़ीनन ऐ मौला ।
यादों को जो तेरी हर लम्हा जीवन में उतारा करते हैं ॥

बदक़िस्मत हैं, कमज़र्फ[1] भी हैं वो लोग जहान[2]-ए-फ़ानी में ।
दानिस्ता[3] जो तेरी ताअत[4] से दुनिया में किनारा करते हैं ॥

जब देखते-देखते ख़्वाब तेरा खुल जाती हैं आँखें मेरी ।
उस वक़्त ग़म[5]-ओ-अन्दोह मेरा दिल पारा-पारा करते हैं ॥

वो जिन को भरोसा है तुझ पर, रहते हैं सहारे पर तेरे ।
जब कोई मुसीबत पड़ती है, तुझको ही पुकारा करते हैं ॥

घुट-घुट के हमेशा जीते हैं तारीक[6] फ़ज़ा में दुनिया की ।
तुझ को है ख़बर ग़म के साये क्या हाल हमारा करते हैं ॥

"दिलबर" को यक़ीं है ऐ मौला, कुछ उनको नहीं है ख़ौफ़[7]-ए-ख़ुदा ।
जो तेरी मोहब्बत में या रब हर ज़ुल्म गवारा[8] करते हैं ॥

1. कम हौसला (कम हिम्मत), 2. ख़त्म होने वाली, 3. जान-बूझ कर, 4. पूजा, 5. अफ़सोस और नाराजगी, 6. अँधेरी, 7. ईश्वर का डर, 8. स्वीकार

जो चाहतों से तेरी ये भरी नहीं होती ।
तो मोतबर ये मेरी ज़िन्दगी नहीं होती ॥

शोऊर[1]-ए-अज़्म-ओ-अमल तूने दे दिया, वरना ।
मेरे इरादों में ये पुख़्तगी नहीं होती ॥

जो सिद्क़ दिल से तेरा नाम मैं नहीं जपता ।
मेरी हयात में आसूदगी नहीं होती ॥

तेरी निगाह-ए-करम मुझ पे उठ गई, वरना ।
मुझे नसीब[2] तेरी बन्दगी नहीं होती ॥

तेरे करम से न मिलती अगर रज़ा[3] तेरी ।
मेरी हयात मुकम्मल[4] कभी नहीं होती ॥

दिया है फ़हम-ओ-बसीरत की रोशनी वरना ।
मेरे नसीब[5] में फिर शायरी नहीं होती ॥

यक़ीं है, तेरे करम के बग़ैर "दिलबर" को ।
नसीब फ़हम-ओ-बसीरत कभी नहीं होती ॥

1. इरादा करने और काम करने का सलीक़ा,
2. प्राप्त, 3. सहमति, 4. पूर्ण,
5. भाग्य

याद आता है जो तू शाम-ओ-सहर आप से आप ।
तेरी चौखट पे झुका करता है सर आप से आप ॥

रोशनी तेरी मोहब्बत की मिली है जो मुझे ।
मेरी नजरों से गिरे लाल-ओ-गुहर आप से आप ॥

तेरी रहमत न इसे समझूँ तो फिर क्या समझूँ ।
तेरी उल्फ़त का हुआ दिल पे असर आप से आप ॥

याद जब आती है तेरी तो ये तू ही जाने ।
आँख बे साख़्ता क्यों होती है तर आप से आप ॥

तेरी आवाज जो सुनता हूँ तेरे कुरआँ[1] से ।
तो लरजते हैं मेरे क़ल्ब-ओ-जिगर आप से आप ॥

तेरे अल्ताफ़-ओ-करम की जो घटायें छाईं ।
लहलहा उट्ठा उम्मीदों का शजर[2] आप से आप ॥

राह पर तेरी बढ़ाया जो क़दम "दिलबर" ने ।
मोतबर उसका हुआ अज़्म-ए-सफ़र आप से आप ॥

1. कुरआन शरीफ़, 2.वृक्ष

या रब तेरी ताअत में दिलकश हर सुब्ह-ओ-शाम लगे ।
प्यारा-प्यारा मेरे मौला मुझको तेरा नाम लगे ॥

बाद-ए-दुनिया की उसको ख़्वाहिश भी नहीं, हाजत भी नहीं ।
तेरी उल्फ़त का ऐ मौला जिसके हाथों जाम लगे ॥

अहल-ए-जहाँ से वो चाहे तो चाहे क्यों इनआम[1] कोई ।
जिसको तेरे नाम की लज़्ज़त सब से बड़ा इनआम लगे ॥

तेरा तसव्वुर जब रहता है, याद तेरी जब आती है ।
दिलकश मुझको सुब्ह लगे है और सुहानी शाम लगे ॥

दिल मेरा मुद्दत से तेरी उल्फ़त में दीवाना है ।
बेख़ुद करने वाला मौला तेरा हर पैग़ाम[2] लगे ॥

यूँ तो लाखों लोग मिले हैं जीवन में मुझको या रब ।
लेकिन जो पाबन्द-ए-वफ़ा थे वो तेरे ख़ुद्दाम[3] लगे ॥

तेरी रहमत और शफ़क़त[4] का ये भी हासिल है या रब ।
रंग तेरी कुदरत का हर इक "दिलबर" को गुलफ़ाम[5] लगे ॥

1. पुरस्कार, 2. संदेश,
3. सेवादार (ख़िदमत करने वाला), 4. मोहब्बत,
5. फूल जैसे रंग वाला

तेरी ताअत में जो गुजरी जिन्दगी अच्छी लगी ।
उसमें जो हासिल हुई है वो खुशी अच्छी लगी ॥

हर वरक़ पर जिसके तेरा नाम रोशन है खुदा ।
मुझको अपनी वो किताब-ए-जिन्दगी अच्छी लगी ॥

दिल की आँखों से जो देखा है तेरी कुदरत खुदा ।
बिलयक़ीं[1] तेरी हर इक कारीगरी अच्छी लगी ॥

तू रग-ए-जाँ से भी है नजदीक मेरे जिस्म में ।
बस इसी निस्बत[2] से मुझको जिन्दगी अच्छी लगी ॥

इस जहाँ की मयकशी से वास्ता मुझको न था ।
बाद-ए-वहदत मिली तो मयकशी अच्छी लगी ॥

हम्द लिखने का शरफ़[3] जब तूने बख़्शा ऐ खुदा ।
तब कहीं जाकर मुझे ये शायरी अच्छी लगी ॥

ग़ैर की चौखट पे जाकर सर झुकाये किस लिये ।
जब तेरे "दिलबर" को तेरी बन्दगी अच्छी लगी ॥

1. निश्चय ही, 2. बाबत, 3. सौभाग्य

बाद इक उम्र के जब मैंने तुझे याद किया ।
जिन्दगी उजड़ी हुई थी उसे आबाद किया ॥

ये तेरा लुत्फ़-ओ-करम कम तो नहीं ऐ मौला ।
जिन्दगी को जो मेरी परतव[1]-ए-अजदाद किया ॥

मैंने जब दिल से पुकारा है तुझे ऐ मौला ।
रहमतों ने तेरी आकर मेरी इमदाद[2] किया ॥

कोई मुश्किल भी नजर आई न मुश्किल मुझको ।
तूने जब अज़्म[3] मेरा गैरत[4]-ए-फौलाद किया ॥

इक तेरी ज़ात का जिसको था सहारा या रब ।
उम्र भर उसने जमाने से न फ़रियाद किया ॥

एक मुद्दत से अधूरी जो रही है, तूने ।
मेरी हस्ती की मुकम्मल वही रुदाद[5] किया ॥

अपनी रहमत से जो "दिलबर" को नवाजा तूने ।
एक मुद्दत से था नाशाद, उसे शाद किया ॥

1. पुरखों की परछाई, 2. मदद, 3. हौसला,
4. लोहे की तरह मजबूत, 5. कहानी (हालत)

खुलूस-ए-दिल से जो तुझ पर निसार होता है ।
वफ़ा शेआर वही बा वेक़ार[1] होता है ॥

वो तेरे हुक्म पे होता है जो अमल[2] पैरा ।
अदब[3] नवाज वही ख़ाकसार होता है ॥

तेरे करम से मिली जिनको दीन[4] की दौलत ।
निज़ाम-ए-दीं में वही बा वेक़ार होता है ॥

तेरी पनाह में रहता है वो खुदा-ए-जहाँ ।
जो मुफ़लिसों का यहाँ ग़मगुसार[5] होता है ॥

खुद अपने आप को जिसने तुझे सुपुर्द किया ।
तेरे करम से वही दीनदार होता है ॥

महकता रहता है गुलशन हयात का मेरी ।
जो याद करके तुझे पुर बहार होता है ॥

यक़ीन है यही "दिलबर" को ख़ालिक़-ए-आलम ।
हर एक बन्दे का तू ग़मगुसार होता है ॥

1. इज़्ज़तदार, 2. आदेशानुसार कार्य करना,
3. तहजीब वाला, 4. ईमान,
5. दोस्त (तकलीफ़ दूर करने वाला)

तेरी जानिब जो अश्क[1]-ए-तर आये ।
मोतबर वो मुझे नज़र आये ॥

आ गये जब अमान[2] में तेरी ।
यूँ लगा जैसे अपने घर आये ॥

मेरे दामन में फैज़ से तेरे ।
दीन-ओ-ईमान के गुहर[3] आये ॥

रहमतों की तेरी ज़िया[4] लेकर ।
मेरे जीवन में हर सहर आये ॥

तेरी चौखट पे वो मिला सब कुछ ।
दिल में हम जो भी सोच कर आये ॥

तेरी चौखट पे अहल-ए-दिल या रब ।
जब भी आये, ब चश्म-ए-तर आये ॥

दे वो "दिलबर" को सोज-ए-दिल या रब ।
जिस में तू याद उम्र भर आये ॥

1. आँखों में आँसू भरे हुए, 2. शरण (सुरक्षा),
3. मोती, 4. रोशनी

जमीं से मैंने खुदा ता[1] ब आसमाँ देखा ।
तेरे ही नूर से हर शय को जौफ़ेशाँ देखा ॥

जिधर निगाह उठाई उधर करम से तेरे ।
हर एक जर्रे से जलवा तेरा अयाँ[2] देखा ॥

किसे बताऊँ जमाने में कौन समझेगा ।
कि तेरे नूर को मैंने कहाँ-कहाँ देखा ॥

तेरे करम का जिसे आसरा मिला है यहाँ ।
तमाम उम्र उस इन्साँ को शादमाँ[3] देखा ॥

समझ में आई तेरी बेमिसाल सन्नाई[4] ।
फ़लक[5] पे जब भी सितारों का कार वाँ देखा ॥

जहाँ के हुस्न-ओ-तरब उसको रास आ न सके ।
तेरे जमाल को जिसने भी बेकराँ[6] देखा ॥

कोई भी हाल हो दुनिया ने तेरे "दिलबर" को ।
तेरे करम से हमेशा ही शादमाँ देखा ॥

1. तक, 2. प्रकट, 3. खुशहाल,
4. कारीगरी, 5. आसमान, 6. अथाह

तू अपनी मोहब्बत की तौक़ीर[1] मुझे दे दे ।
फिर ज़ौक़-ए-इबादत की तासीर मुझे दे दे ॥

वो जिसकी बलन्दी पर रश्क आये जमाने को ।
तू अपने करम से वो तक़दीर मुझे दे दे ॥

ताँ[2] उम्र रहूँ तेरी चौखट पे गदा[3] बन के ।
तू अपनी गुलामी की तौक़ीर मुझे दे दे ॥

जो मक़सद-ए-हस्ती है, मिल जाये मुझे जिससे ।
उस इल्म की तू या रब तनवीर[4] मुझे दे दे ॥

वो जिस से मिटा डालूँ जुल्मत मैं जमाने की ।
वो शम्म-ए-हिदायत की तनवीर मुझे दे दे ॥

जो अश्क-ए-निदामत से कर दूँ मैं रक़म[5] दिल पर ।
वो हुस्न[6]-ए-अदा तर्ज[7]-ए-तहरीर मुझे दे दे ॥

"दिलबर" की तमन्ना है बस तुझ से यही या रब ।
तू अपनी गुलामी की जागीर मुझे दे दे ॥

1. इज़्ज़त, 2. जिन्दगी भर, 3. भिखारी,
4. रोशनी 5. लिखना, 6. तरीक़ा,
7. लिखने की कला

दर्द-ए-ग़म-ए-दौराँ हो या ग़म की फ़रावानी[1] ।
क्या फ़िक्र कि हासिल है जब तेरी निगहबानी[2] ॥

तू मालिक-ओ-राज़िक़[3] है, तू ख़ालिक़-ओ-क़ादिर[4] है।
हो जाये न क्यों दुनिया मौला तेरी दीवानी ॥

पाते हैं तेरी शफ़क़त दुनिया में वही मौला ।
हर ख़्वाहिश-ए-दुनिया की देते हैं जो क़ुर्बानी ॥

जिन बन्दों की करता है तू फ़िक्र सदा या रब ।
कुछ उनको नहीं होती दुनिया में परेशानी ॥

कौनेन में तू जिसको जो चाहे अता कर दे ।
सब का तू ही ख़ालिक़ है, तेरी ही है सुल्तानी ॥

कुछ नूर की तू अपने तनवीर मुझे दे दे ।
इस पैकर[5]-ए-ख़ाकी को कर दे जरा नूरानी[6] ॥

दुनिया की हर इक शय में या रब तेरी रहमत से ।
"दिलबर" ने ब हर लम्हा देखी तेरी ताबानी[7] ॥

1. ज्यादती (अधिकता), 2. सुरक्षा, 3. ख़ुराक देने वाला,
4. कुदरत वाला, 5. नष्ट होने वाला ढाँचा,
6. प्रकाशित, 7. रोशनी (चमक)

हुआ है जो तेरा करम धीरे - धीरे ।
मिटे हैं मेरे सारे गम धीरे - धीरे ॥

अजब था तेरे संग[1]-ए-दर का वो मन्जर ।
जबीं जब हुई मेरी ख़म[2] धीरे - धीरे ॥

करम से तेरे हो गई मुझको आसाँ ।
रह-ए-जिन्दगी हर क़दम धीरे - धीरे ॥

मिला है सुकूँ मेरे क़ल्ब-ओ-जिगर को ।
तेरे फ़ैज से दम ब दम धीरे - धीरे ॥

मिली दौलत-ए-इल्म तुझ से, तो टूटा ।
जहाँ का तिलिस्म-ओ-भरम धीरे - धीरे ॥

मेरी जीस्त के हर वरक़[3] पर खुदाया ।
हुआ नाम तेरा रक़म धीरे - धीरे ॥

मिले तेरे "दिलबर" को तेरे करम से ।
जमाने में जाह-ओ-हशम धीरे - धीरे ॥

1. मन्दिर (देव स्थान), 2. झुकना, 3. पृष्ठ

दिल में बसा के तेरे ग़म-ए-मोतबर को मैं ।
कब से तरस रहा हूँ करम की नज़र को मैं ॥

छाने लगी है क़ल्ब पे मस्ती अजीब सी ।
समझा इसे भी तेरे करम के असर को मैं ॥

ला इन्तेहा है हुस्न तेरा मैं समझ गया ।
ख़ातिर में लाऊँ किस तरह शम्स[1]-ओ-क़मर को मैं ॥

जख़्म-ए-जिगर जो अहल-ए-जहाँ ने लगाये हैं ।
लाया हूँ तेरे पास उन जख़्म-ए-जिगर को मैं ॥

मैं जानता हूँ राह-ए-वफ़ा है तेरी डगर ।
अपनाऊँ जिन्दगी में न क्यों उस डगर को मैं ॥

मौजूद है जहाँ की तू हर शय में, इसलिये ।
उल्फ़त से देखता हूँ हर इक ख़ुश्क-ओ-तर को मैं ॥

"दिलबर" ये कह रहा है करम से तेरे ख़ुदा ।
आसाँ करूँगा जीस्त के मुश्किल सफ़र को मैं ॥

1. सूरज और चाँद

तुझी से बज़्म-ए-जहाँ में बहार है मौला ।
तेरे वजूद पे दुनिया निसार है मौला ।।

चला हूँ राह-ए-सदाक़त पे ले के नाम तेरा ।
ये ग़म नहीं कि बहुत ख़ारज़ार[1] है मौला ।।

तेरी मता-ए-मोहब्बत जो पास रखता है ।
हक़ीक़तों में वही मालदार है मौला ।।

जो गामज़न[2] हैं रह-ए-हक़ पे, वो समझते हैं ।
यही तो राह तेरी रहगुज़ार है मौला ।।

किसे सुनाऊँ सिवा तेरे हाल-ए-ग़म अपना ।
जहाँ में कौन मेरा ग़मगुसार है मौला ।।

गुनाह करता है उनके भी तू मुआफ़[3] सदा ।
हयात जिनकी बहुत दाग़दार है मौला ।।

निगाह-ए-लुत्फ़-ओ-करम हो वजूद-ए-"दिलबर" पे ।
ये तेरा अब्द[4] बहुत बेक़रार है मौला ।।

1. काटों भरी, 2. चलने वाला,
3. क्षमा, 4. गुलाम

जिस्म तेरा है जिन्दगी तेरी ।
जो भी देता है दे, खुशी तेरी ॥

तेरी ही राह का मुसाफ़िर हूँ ।
मुझ पे होगी नज़र कभी तेरी ॥

जगमगा दे मेरी भी तीरा[1]शबी ।
चाँद तेरा है, चाँदनी तेरी ॥

वो वफ़ादार है ज़माने में ।
जो करे दिल से बन्दगी तेरी ॥

मुस्त[2]हक़ हैं तेरे करम के वही ।
जिनको हासिल हुई खुशी तेरी ॥

क़ल्ब-ए-मोमि[3]न को देती है तस्[4]कीं ।
गुफ़्[5]तगू तेरी नग़मगी तेरी ॥

जगमगाये हयात "दिलबर" की ।
जो मिले इसको रोशनी तेरी ॥

1. स्याह रात, 2. हक़दार,
3. ईमान लाने वाला, 4. आराम, 5. चर्चा

सब से अफ़ज़ल ज़ात है तेरी तेरा ही संसार है ।
तू ही पैदा करने वाला तू ही पालनहार है ॥

तुझसे ही आसान हुई हैं मुश्किल राहें जीवन की ।
तेरे करम से मेरे मौला सुखी मेरा घर-बार है ॥

ला सानी है ज़ात तेरी अनवार का तेरे क्या कहना ।
नूर से तेरे ही हर ज़र्रा दुनिया का ज़ौबार है ॥

अब्र-ए-ख़्वाँ में हर सू मौला ज़ुल्म-ओ-सितम के साये हैं ।
तेरे मुख़्लिस[1] बन्दों का अब जीना भी दुश्वार है ॥

तेरी क़ुदरत का मज़हर[2] है ज़र्रा-ज़र्रा दुनिया का ।
हर इक शय इस बज़्म-ए-जहाँ की तेरी ताबेदार है ॥

दूर जो तुझसे रहता है डूबेगा बहर[3]-ए-ग़म में वही ।
तेरी शरण में जो आता है उसका बेड़ा पार है ॥

चश्म-ए-करम हो बन्दों पर इस दुनिया में इक "दिलबर" क्या ।
ज़ुल्म-ओ-सितम की ज़द[4] में या रब सारा ही संसार है ॥

1. सच्चे, 2. जाहिर होना,
3. दुखों का महासागर, 4. निशाने पर

जो तेरे एहकाम[1] में ढलता है ऐ परवरदिगार ।
वो मलक[2] से भी सिवा बनता है ऐ परवरदिगार ॥

उससे तू राज़ी सदा रहता है ऐ परवरदिगार ।
जो कि तेरी राह पर चलता है ऐ परवरदिगार ॥

नेक बन्दा है यक़ीनन इस जहाँ में वो तेरा ।
जो सदा सब का भला करता है ऐ परवरदिगार ॥

उस पे रहती है सदा रहमत तेरी सायाँ[3] फ़िगन ।
नाम हरदम जो तेरा जपता है ऐ परवरदिगार ॥

बेकसों से ख़ास तुझको उन्सियत[4] है दहर[5] में ।
जिनके तू एहसास में ढलता है ऐ परवरदिगार ॥

जिन्दगी में राह-ए-हक़ से वो भटक सकता नहीं ।
शम्म[6]-ए-ईमाँ ले के जो चलता है ऐ परवरदिगार ॥

दौलत-ए-दुनिया रहे "दिलबर" के दिल में किस तरह ।
इश्क़ उसमें जब तेरा बसता है ऐ परवरदिगार ॥

1. आदेशों, 2. फ़रिश्ता, 3. साया करने वाली,
4. प्रेम (लगाव), 5. दुनिया, 6. ईमान की मशाल

तुझ से ही पा के जिन्दगी तुझ से जुदा हुई ।
थी आशना[1] ये तुझ से ही, नाआशना हुई ॥

तेरे ही इल्तेफ़ात-ओ-करम से जहान में ।
इमदाद के लिये हमें ताक़त अता हुई ॥

जिसने भी लौ लगाई तेरी ज़ात-ए-पाक[2] से ।
उसको अजीज़तर[3] तेरी हर इक अदा हुई ॥

बन्दों का तेरे कुछ न बुरा कर सकी कभी ।
ये गर्दिश-ए-हयात जो उनसे ख़फ़ा हुई ॥

वहदत का तेरी जाम जो पीता हूँ रात-दिन ।
तुझको ख़बर है जीस्त मेरी क्या से क्या हुई ॥

मिलती रही जो तेरी नसीहत की रोशनी ।
दिल में जो गम की तीराशबी थी, फ़ना हुई ॥

"दिलबर" समझ रहा है कि सब कुछ उसे मिला ।
उसकी हयात तुझ से ही जो आशना हुई ॥

1. परिचित, 2. पवित्र, 3. अत्यधिक प्रिय

ऐ खुदा मुझको शोउँर-ए-बन्दगी[1] कर दे अता ।
और कुछ फिर दे, न दे, बस ये खुशी कर दे अता ॥

जो रक़म तख़लीक़ मैं कर दूँ पसन्द आये तुझे ।
मेरे हाथों को भी वो कारीगरी कर दे अता ॥

ऐ मेरे ख़ालिक़ यही है सिर्फ़ तुझसे इल्तजा ।
राह-ए-हक़ पर जो चले वो जिन्दगी कर दे अता ॥

अपना दीवाना बना दे जिन्दगी भर के लिये ।
अपनी चाहत की मुझे वो चाशनी कर दे अता ॥

अजमत[2]-ए-इन्सानियत भी जिस पे नाँजाँ[3] हो सदा ।
जीस्त मुझको दहर में वो दायमी कर दे अता ॥

सिर्फ़ तेरे नाम की पीता रहूँ मैं उम्र भर ।
खुश्क होटों को मेरे वो तिश्नगी[4] कर दे अता ॥

वो हिसाँर[5]-ए-गम में भी फँस कर सदा हँसता रहे ।
अपने "दिलबर" को खुदा जिन्दादिली कर दे अता ॥

1. पूजा करने का तरीक़ा, 2. आदमी का बड़प्पन,
3. गौर वान्वित 4. प्यास, 5. दुख-दर्द का घेरा

या रब तेरा करम, मुझे इन्साँ बना दिया ।
फिर इल्म-ओ-आगही का मुझे आईना दिया ॥

दरकार जो भी शय थी मेरी जीस्त के लिये ।
तूने अता किया मुझे, दुनिया ने क्या दिया ॥

बख़्शी है इल्म-ए-दीन की जो तूने रोशनी ।
उसने रह-ए-हयात को आसाँ बना दिया ॥

राह-ए-वफ़ा पे चलने लगी जिन्दगी मेरी ।
तूने हक़ीक़तों का जो जलवा दिखा दिया ॥

दे कर बशर को इल्म-ओ-हिदायत की रोशनी ।
उस पर करम कि अपना ख़लीफ़ा बना दिया ॥

आती है शर्म और सिवा[1] माँगते हुये ।
जब तूने हाजतों[2] से मेरी ख़ुद सिवा दिया ॥

दुनिया में मोतबर हुई "दिलबर" की जिन्दगी ।
तूने जब उसको आरिफ़[3]-ए-हस्ती बना दिया ॥

1. अधिक, 2. जरुरतों,
3. जिन्दगी को पहचानने वाला

हो गया हूँ जब कि दीवाना मैं तेरे नाम का ।
अब रहा या रब जहाँ आख़िर मेरे किस काम का ।।

लुत्फ़ से तेरे हुई पूरी मेरी हर आरज़ू ।
मैं रहा तालिब न दुनिया के किसी इनआम का ।।

जब कोई पैग़ाम तेरा मिल गया या रब मुझे ।
सिद्क़ दिल से कर लिया सम्मान उस पैग़ाम का ।।

नाम लेकर जब तेरा राह-ए-वफ़ा पर चल पड़ा ।
मुझको रहता ही नहीं खटका कोई अन्जाम का ।।

ज़िक्र है तेरा ज़ुबाँ पर, लब पे तेरा नाम है ।
ऐ ख़ुदा मामूल[1] है ये मेरा सुब्ह-ओ-शाम का ।।

मैं सफ़र में ज़िन्दगानी के परीशाँ क्यों रहूँ ।
रहमतों से तेरी आरिफ़[2] हूँ जो हर इक गाम[3] का ।।

तेरी यादों में रहा करता है ये "दिलबर" मगन ।
हेच है इसके क़रीं चर्चा गुल-ओ-गुलफ़ाम का ।।

1. नियम, 2. परिचित, 3. जगह (स्थान)

राहों से तेरी है बहुत बेज़ार आदमी ।
या रब करम हो, है ये ज़ियाँकार[1] आदमी ॥

वो अहद[2] जो अज़ल से किया था, भुला दिया ।
दुनिया में आके हो गया गद्दार आदमी ॥

इन्सानियत की हद से गिरा है कुछ इस क़दर ।
जिसके सबब से हो गया बेकार आदमी ॥

मक्र-ओ-फ़रेब, बुग़्ज-ओ-हसद से है आशना ।
हाथों में अब लिये है ये हथियार आदमी ॥

मतलबपरस्त और दग़ाबाज़ बन गया ।
या रब हुआ है किस क़दर बदकार आदमी ॥

अब दूसरों से अपने भले के लिये फ़क़त ।
रखता है इस जहाँ में सरोकार आदमी ॥

चश्म-ए-करम हो इस पे ये "दिलबर" की है दुआ ।
माना नहीं करम का ये हक़दार आदमी ॥

1. दुष्चरित्र (बुरे आचरण वाला), 2. कौल

मंजर-मंजर ढूँढ रहा हूँ ।
तुझको बराबर ढूँढ रहा हूँ ॥

दीद को तेरे दीवानों को ।
दहर में घर-घर ढूँढ रहा हूँ ॥

हर जर्रे में जान के तुझको ।
मैं बहर-ओ-बर ढूँढ रहा हूँ ॥

बेखुद होकर तेरे घर के ।
दीवार-ओ-दर ढूँढ रहा हूँ ॥

शायद तू मिल जाये मुझको ।
दिल के अन्दर ढूँढ रहा हूँ ॥

जिसने तेरा जलवा देखा ।
वो दीदावर ढूँढ रहा हूँ ॥

जो तेरी जानिब ले जाये ।
ऐसा "दिलबर" ढूँढ रहा हूँ ॥

जहाँ में कहाँ तेरा जलवा नहीं है ।
निगाहों पे लेकिन भरोसा नहीं है ॥

समझ पाये क्या शान-ए-कुदरत वो तेरी ।
तेरा जिसने देखा करिश्मा नहीं है ॥

जहाँ में तू देता है सबको बराबर ।
जो है बद[1] अक़ीदा वो पाता नहीं है ॥

तेरा मर्तबा क्या वो समझेगा या रब ।
तेरी याद में जो तड़पता नहीं है ॥

जिसे तूने चाहा उसे सब ने चाहा ।
तेरा जो नहीं है वो किसी का नहीं है ॥

तलब और तुझसे करूँ क्या मैं या रब ।
मेरे पास तेरा दिया क्या नहीं है ॥

तेरा ही सहारा है "दिलबर" को या रब ।
तेरे मा[2]सिवा कुछ सहारा नहीं है ॥

1. बुरे विचारों वाला, 2. अलावा

तेरी तरफ़ जो कभी इक क़दम बढ़ाया है ।
बड़ा सुकून दिल-ए-मुजतरिब ने पाया है ॥

जहाँ में जब भी सताया है तेरे बन्दों ने ।
मैं क्या बताऊँ मुझे तू ही याद आया है ॥

ख़ता मुआफ़ कि तुझको भुला के दुनिया में ।
जहाँ के नाज़ बहुत उम्र भर उठाया है ॥

तेरी निगाह-ए-करम हो तो दूर हो जाये ।
अँधेरा ग़म का मेरी जीस्त पे जो छाया है ॥

हयात राह-ए-वफ़ा पर जो चल पड़ी मेरी ।
तेरे करम ने मुझे आईना दिखाया है ॥

दिल[1]-ए-हजीं को हक़ीक़ी ख़ुशी नसीब हुई ।
जो अपने ख़ान-ए-दिल में तुझे बसाया है ॥

जो बेसबात थी बिखरी हयात "दिलबर" की ।
जहाँ में तूने उसे मोतबर बनाया है ॥

1. ग़मगीन दिल

ये माना कोई हौसला भी न देगा ।
जहाँ दे न दे क्या ख़ुदा भी न देगा ॥

तेरे मासिवा मक़सद-ए-जिन्दगी का ।
यहाँ कोई या रब पता भी न देगा ॥

कोई तेरे बीमार को इस जहाँ में ।
दुआ भी न देगा, दवा भी न देगा ॥

न चमकें तेरे चाँद-सूरज फ़लक पर ।
जहाँ को कोई फिर जेया भी न देगा ॥

तेरी रहमतों का न साया अगर हो ।
किसी को ये जीवन मजा भी न देगा ॥

सिवा तेरे मैदान[1]-ए-महशर में या रब ।
गुनहगार को आसरा भी न देगा ॥

तेरी हम्द "दिलबर" जो लिखता है या रब ।
उसे क्या तू इसका सिला भी न देगा ॥

1. क़यामत का मैदान

जब से मिला ताअत का तेरी रंग इलाही ।
खुशबू से भर गया मेरा हर अंग इलाही ॥

मन भागता है जानिब[1]-ए-अफ़कार-ए-दुनियवी ।
होती है उसके साथ मेरी जंग इलाही ॥

देता है जब किसी को तो देता है ग़ैब[2] से ।
देने का भी अजब है तेरा ढंग इलाही ॥

मुझ पर भी तेरी चश्म-ए-इनायत को देखकर ।
अरबाब[3]-ए-इल्म-ओ-फिक्र हैं सब दंग इलाही ॥

आग़ोश[4] में कुदरत की तेरी हैं जो फ़ज़ायें ।
आती हैं नजर मुझको वो खुशरंग इलाही ॥

करता हूँ तेरी हम्द की मैं कोशिशें मगर ।
चलता नहीं है जेहन[5] मेरे संग इलाही ॥

"दिलबर" पे करम हो कि उसे तेरी ये दुनिया ।
करती है शब-ओ-रोज बहुत तंग इलाही ॥

1. दुनियादारी की फिक्र की तरफ, 2. छुपे तौर पर,
3. ज्ञानी और विचारक, 4. गोद, 5. बुद्धि

तेरी याद को हमसफ़र कर लिया है ।
हयात और भी मोतबर कर लिया है ॥

जहाँ की मोहब्बत से दामन बचा कर ।
तेरे इश्क़ को अपने सर कर लिया है ॥

तेरी याद, तेरे सहारे से मैंने ।
बहुत पाक क़ल्ब-ओ-जिगर कर लिया है ॥

करम से तेरे अपनी हस्ती में या रब ।
तख़य्युल[1] को आसांनतर[2] कर लिया है ॥

तेरी याद में अश्क पैहम बहा कर ।
उन्हें रश्क-ए-लाल-ओ-गुहर कर लिया है ॥

न क्यों मुतमइन हो मेरा क़ल्ब या रब ।
तेरे इश्क़ ने दिल में घर कर लिया है ॥

तेरे फ़ैज़ से तेरे "दिलबर" ने या रब ।
ग़म-ए-दो जहाँ दर[3]-गुजर कर लिया है ॥

1. विचारों, 2. अत्यधिक सरल, 3. भूल जाना

नफ़स, हर नफ़स, हर क़दम देखता हूँ ।
ब हर सू[1] तेरा ही करम देखता हूँ ॥

जहाँ से मैं या रब करूँ क्या मोहब्बत ।
यहाँ तो फ़क़त दर्द-ओ-ग़म देखता हूँ ॥

करिश्मे तेरी शान-ए-कुदरत के या रब ।
बसारत[2] है कम, कम से कम देखता हूँ ॥

ख़ुशी दे, कि ग़म दे, तेरी हर अता में ।
ख़ुदाया तेरा ही करम देखता हूँ ॥

समाते नहीं तेरे जलवे नज़र में ।
कभी जो मैं सू[3]-ए-हरम देखता हूँ ॥

करम की ग़रज़ से तेरी सम्त[4] या रब ।
हमेशा ही बा चश्म[5]-ए-नम देखता हूँ ॥

तेरी हम्द लिख कर कलम कह रहा है ।
कोई तुझ सा "दिलबर" भी कम देखता हूँ ॥

1. हर जगह, 2. देखने की योग्यता, 3. काबे की तरफ़,
4. तरफ़, 5. आँसू भरी आँखों से

है यक़ीं या रब करम जिस दम तेरा हो जायेगा ।
जिन्दगी का मेरी आसाँ रास्ता हो जायेगा ॥

क्या बताऊँ मुझको तो इसका गुमाँ तक भी न था ।
दिल मेरा तेरे करम से आशना हो जायेगा ॥

तेरा दीवाना हुआ है दिल तो अच्छा ही हुआ ।
ग़म नहीं इसका कि इक आलम ख़फ़ा हो जायेगा ॥

फ़िक्र इसकी क्या करूँ दुनिया न देगी कुछ मुझे ।
तू जो चाहेगा मुझे सब कुछ अता हो जायेगा ॥

जब तेरी चश्म-ए-करम होगी खुदा-ए-दो जहाँ ।
जिन्दगी का मोतबर हर जाविया[1] हो जायेगा ॥

दे मुझे तौक़ीर या रब राह-ए-हक़ पर मैं चलूँ ।
जिन्दगी का इस तरह कुछ हक़ अदा हो जायेगा ॥

इस जहाँ में आसरा तू ही न देगा जब उसे ।
तेरा "दिलबर" ऐ खुदा बे आसरा हो जायेगा ॥

1. हिस्सा

सर पे तेरी रहमतों का सायेबाँ होते हुये ।
क्यों डरूँ दुनिया से मैं सूद[1]-ओ-जियाँ होते हुये ॥

ये कहूँ क्यों सर छुपाने के लिये इक छत नहीं ।
तेरी रहमत का खुदाया आसमाँ होते हुये ॥

इस जहाँ में कोई मेरा क्या बिगाड़ेगा भला ।
सर पे तेरा साया-ए-अम्न-ओ-अमाँ होते हुये ॥

मेरी मर्ज़ी है जहाँ चाहूँ वहाँ जाकर रहूँ ।
मैं तेरा हूँ, तेरा ये सारा जहाँ होते हुये ॥

तू है जब मेरा अमीं तो देख सकता ही नहीं ।
मेरी हस्ती को जहाँ में रायगाँ होते हुये ॥

तेरी रहमत से मैं देखूँगा जहाँ में एक दिन ।
अपनी हस्ती को यक़ीनन कामराँ होते हुये ॥

क्यों फले-फूले न इस दुनिया में "दिलबर" का चमन ।
उस चमन का तेरे जैसा बाग़बाँ होते हुये ॥

1. अच्छाई - बुराई

या रब जो तुझ से हौसला पाया न जायेगा ।
बार-ए-ग़म-ए-हयात उठाया न जायेगा ॥

या रब तेरे करम का इशारा न हो अगर ।
तेरे क़रीं किसी से भी आया न जायेगा ॥

बन्दे जो तेरे सोयेंगे भूखे तो है यक़ीं ।
रज़्ज़ाक़[1] तू है तुझ से ये देखा न जायेगा ॥

तू ही चला रहा है जहाँ के निजाम को ।
वरना किसी बशर से चलाया न जायेगा ॥

या रब वजूद होगा बशर का न मोतबर ।
यादों से जो तेरी ये सजाया न जायेगा ॥

तेरा करम न हो तो फिर इन्सान से यहाँ ।
इस जिन्दगी का दर्द मिटाया न जायेगा ॥

"दिलबर" पे की न चश्म-ए-करम तूने जो खुदा ।
बिगड़ा नसीब उसका बनाया न जायेगा ॥

1. खाद्य पदार्थ (भोजन) देने वाला

जो बशर तेरी राहों पे चलता नहीं ।
अपनी मंजिल पे फिर वो पहुँचता नहीं ॥

तेरी रहमत से महरूम[1] होता है वो ।
सिद्क़ दिल से इबादत जो करता नहीं ॥

हक़[2] रसा जो नहीं उसके हक़ में कभी ।
तेरी शफ़क़त का सागर छलकता नहीं ॥

सुर्ख़रू[3] उसकी होती नहीं जिन्दगी ।
तेरे साँचें में या रब जो ढलता नहीं ॥

ज़ात पे तेरी जिसका है मोहकम यक़ीं ।
तेरी रहमत से महरूम रहता नहीं ॥

जब से तेरी मोहब्बत ने घर कर लिया ।
ख़ान-ए-दिल में कोई ठहरता नहीं ॥

दिल के गुलशन में "दिलबर" के आ जा ख़ुदा ।
तू नहीं तो ये गुलशन महकता नहीं ॥

1. ना उम्मीद, 2. सच्चाई परस्त, 3. प्रसिद्ध होना

इस जहाँ में किसी का सहारा नहीं ।
मासिवा तेरे कोई हमारा नहीं ॥

मेरी हस्ती के वो दिन गये रायगाँ ।
तेरी यादों में जो दिन गुजारा नहीं ॥

तेरे दर पे न आऊँ तो जाऊँ कहाँ ।
तेरे दर के सिवा कोई चारा नहीं ॥

जिन्दगी के है सागर में कश्ती मेरी ।
जिस तरफ़ देखता हूँ किनारा नहीं ॥

तेरी रहमत वो समझे क्या, जिसने तुझे ।
ऐ ख़ुदा सिद्क़ दिल से पुकारा नहीं ॥

रोशनी जिसको तुझ से मिली दीन की ।
उसकी अजमत[1] का कोई किनारा नहीं ॥

तेरा लुत्फ़-ओ-करम उस पे है ऐ ख़ुदा ।
तेरा "दिलबर" यहाँ बेसहारा नहीं ॥

1. बड़ाई

तेरी उल्फ़त ने मेरी हस्ती को आला[1] कर दिया ।
सर बलन्दी और ऊँचा मेरा रुतबा कर दिया ॥

एक मुद्दत से मरीज़-ए-दुनियादारी था मगर ।
जब पड़ी तेरी निगाह-ए-लुत्फ़, अच्छा कर दिया ॥

गुमरही की राह पर मैं चल रहा था ऐ ख़ुदा ।
तूने दी राह-ए-सदाक़त, पाक जज़्बा कर दिया ॥

ख़ाना-ए-दिल में अँधेरा ही अँधेरा था मेरे ।
इश्क़ ने तेरे ख़ुदा इस में उजाला कर दिया ॥

ये तेरी चश्म-ए-इनायत है, ये तेरा है करम ।
जिसने रोशन जिन्दगी का गोशा-गोशा कर दिया ॥

ऐ ख़ुदा अपना बना कर तूने हस्ती को मेरी ।
गुलशन-ए-इन्सानियत में और बाला कर दिया ॥

जगमगा उट्ठी है "दिलबर" की जहाँ में जिन्दगी ।
दूर उससे तूने जब ग़म का अँधेरा कर दिया ॥

1. बहुत बलन्द